ੴ

जपजी साहिब

आध्यात्मिकता की ओर एक यात्रा

हिंदी अनुवाद

SikhBookClub.com

SGGSONLINE.COM

विषय-सूची

1. जपजी साहिब ---------- 1
2. अरदास-प्रार्थना ---------- 52
3. आत्मा की यात्रा पर निकलें: अपनी आत्मा का पोषण करें ---------- 56
4. यात्रा का दर्शन ---------- 58
5. महिलाओं की भूमिका ---------- 60
6. पगड़ी का महत्व ---------- 63
7. आपकी यात्रा में विनम्रता का मूल सार ---------- 65

🙏🙏🙏We are distributing Free Gutkas, Divine message of the Guru globally in all the major languages, To Continue this Monumental task, please donate at https://sggsonline.com/donation

This Sewa has been done by Sewadars & SikhBookClub.

This text is only a translation and only gives the essence of the Guru's Divine word. For a more complete understanding, please read the Gurumukhi Sri Guru Granth Sahib Ji. If any errors are noticed, please notify us immediately via email at walnut@gmail.com.

Publisher

© Sikhbookclub.com

Chino, Ca 91710

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

१ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

अकाल-पुरख एक है, जिसका नाम 'अस्तित्व वाला' है जो सृष्टि का रचनहार है, (कर्ता है) जो सब में व्यापक है, भय से रहित है (निर्भय), वैर से रहित है (निरवैर), जिसका स्वरूप काल से परे है, (भाव जिसका शरीर नाश-रहित है), जो योनियों में नहीं आता, जिसका प्रकाश अपने आप से हुआ है और जो सतगुरू की कृपा से मिलता है।

॥ ਜਪੁ ॥

॥ जपु ॥

जाप करो। (इसे गुरु की वाणी का शीर्षक भी माना गया है।)

ਆਦਿ ਸਚੁ ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥

निरंकार (अकाल पुरख) सृष्टि की रचना से पहले सत्य था, युगों के प्रारम्भ में भी सत्य (स्वरूप) था।

ਹੈ ਭੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ਭੀ ਸਚੁ ॥੧॥

है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥

अब वर्तमान में भी उसी का अस्तित्व है, श्री गुरु नानक देव जी का कथन है भविष्य में भी उसी सत्यस्वरूप निरंकार का अस्तित्व होगा II १ II

ਸੋਚੈ ਸੋਚਿ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਸੋਚੀ ਲਖ ਵਾਰ ॥

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥

यदि कोई लाख बार शौच (स्नानादि) करता रहे तो भी इस शरीर के बाहरी स्नान से मन की पवित्रता नहीं हो सकती। मन की पवित्रता के बिना परमेश्वर (वाहेगुरु) के प्रति विचार भी नहीं किया जा सकता।

ਚੁਪੈ ਚੁਪ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਲਾਇ ਰਹਾ ਲਿਵ ਤਾਰ ॥

चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥

यदि कोई एकाग्रचित्त समाधि लगाकर मुंह से चुप्पी धारण कर ले तो भी मन की शांति (चुप) प्राप्त नहीं हो सकती; जब तक कि मन से झूठे विकार नहीं निकल जाते।

ਭੁਖਿਆ ਭੁਖ ਨ ਉਤਰੀ ਜੇ ਬੰਨਾ ਪੁਰੀਆ ਭਾਰ ॥

भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥

हे जीव! निःसंदेह इस संसार में तू कितने भी भोग्य पदार्थों को ग्रहण कर ले या कितने भी पूजा-पाठ, व्रत जैसे आडम्बरों को करके उस परमात्मा को पाने की चाह रख किन्तु अगर अपने अंदर

के तृष्णा रूपी हिरण का शिकार नहीं किया तो सब व्यर्थ है भाव परमात्मा इन तृष्णाओं से परे है। अगर तुम्हारे अंदर उन पदार्थों के लिए तृष्णा समाप्त नहीं होती तो तू उस परमात्मा को नहीं पा सकता।

ਸਹਸ ਸਿਆਣਪਾ ਲਖ ਹੋਹਿ ਤ ਇਕ ਨ ਚਲੈ ਨਾਲਿ ॥

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥

चाहे किसी के पास हज़ारों-लाखों चतुराई भरे विचार हों लेकिन ये सब अहंकार युक्त होने के कारण परमेश्वर तक पहुँचने में कभी सहायक नहीं होते।

ਕਿਵ ਸਚਿਆਰਾ ਹੋਈਐ ਕਿਵ ਕੂੜੈ ਤੁਟੈ ਪਾਲਿ ॥

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥

अब प्रश्न पैदा होता है कि फिर परमात्मा के समक्ष सत्य का प्रकाश पुंज कैसे बना जा सकता है, हमारे और निरंकार के बीच मिथ्या की जो दीवार है वह कैसे टूट सकती है?

ਹੁਕਮਿ ਰਜਾਈ ਚਲਣਾ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆ ਨਾਲਿ ॥੧॥

हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥

सत्य रूप होने का मार्ग बताते हुए श्री गुरु नानक देव जी कथन करते हैं - यह सृष्टि के प्रारंभ से ही लिखा चला आ रहा है कि ईश्वर के आदेश अधीन चलने से ही सांसारिक प्राणी यह सब कर सकता है II १ II

ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਆਕਾਰ ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਹਿਆ ਜਾਈ ॥

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥

(सृष्टि की रचना में) समस्त शरीर (निरंकार के) आदेश द्वारा ही रचे गए हैं, किन्तु उसके आदेश को मुँह से शब्द निकाल कर वर्णित नहीं किया जा सकता।

ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਜੀਅ ਹੁਕਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ॥

हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥

परमेश्वर के आदेश से (इस धरा पर) अनेकानेक योनियों में जीवों का सृजन होता है, उसी के आदेश से ही मान-सम्मान (अथवा ऊँच - नीच का पद) प्राप्त होता है।

ਹੁਕਮੀ ਉਤਮੁ ਨੀਚੁ ਹੁਕਮਿ ਲਿਖਿ ਦੁਖ ਸੁਖ ਪਾਈਅਹਿ ॥

हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥

परमेश्वर (वाहेगुरु) के आदेश से ही जीव श्रेष्ठ अथवा निम्न जीवन प्राप्त करता है, उसके द्वारा ही लिखे गए आदेश से जीव सुख और दुःख की अनुभूति करता है।

ਇਕਨਾ ਹੁਕਮੀ ਬਖਸੀਸ ਇਕਿ ਹੁਕਮੀ ਸਦਾ ਭਵਾਈਅਹਿ ॥

इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥

परमात्मा के आदेश से ही कई जीवों को कृपा मिलती है, कई उसके आदेश से आवागमन के चक्र में फँसे रहते हैं।

ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਸਭੁ ਕੋ ਬਾਹਰਿ ਹੁਕਮ ਨ ਕੋਇ ॥

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥

उस सर्वोच्च शक्ति परमेश्वर के अधीन ही सब-कुछ रहता है, उससे बाहर संसार का कोई कार्य नहीं है।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੈ ਜੇ ਬੁਝੈ ਤ ਹਉਮੈ ਕਹੈ ਨ ਕੋਇ ॥੨॥

नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥

हे नानक ! यदि जीव उस अकाल पुरख के आदेश को प्रसन्नचित्त होकर जान ले तो कोई भी अहंकारमयी 'मैं' के वश में नहीं रहेगा। यही अहं तत्व सांसारिक वैभव में लिप्त प्राणी को निरंकार के निकट नहीं होने देता॥ २ ।।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਤਾਣੁ ਹੋਵੈ ਕਿਸੈ ਤਾਣੁ ॥

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥

(परमेश्वर की कृपा से ही) जिस किसी के पास आत्मिक शक्ति है, वही उस (सर्वशक्तिमान)के बल का यश गायन कर सकता है।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਦਾਤਿ ਜਾਣੈ ਨੀਸਾਣੁ ॥

गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥

कोई उसके द्वारा प्रदत आर्शीवादों को (उसकी) कृपादृष्टि मानकर ही उसकी कीर्ति का गुणगान कर रहा है।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਗੁਣ ਵਡਿਆਈਆ ਚਾਰ ॥

गावै को गुण वडिआईआ चार ॥

कोई जीव उसके अकथनीय गुणों व महिमा को गा रहा है।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਵਿਦਿਆ ਵਿਖਮੁ ਵੀਚਾਰੁ ॥

गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥

कोई उसके विषम विचारों (ज्ञान) का गान विद्या द्वारा कर रहा है।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਸਾਜਿ ਕਰੇ ਤਨੁ ਖੇਹ ॥

गावै को साजि करे तनु खेह ॥

कोई उसका गुणगान रचयिता व संहारक ईश्वर का रूप जानकर करता है।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਜੀਅ ਲੈ ਫਿਰਿ ਦੇਹ ॥

गावै को जीअ लै फिरि देह ॥

कोई उसका वर्णन इस प्रकार करता है कि वह परम सत्ता जीवन देकर फिर वापिस ले लेती है।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਜਾਪੈ ਦਿਸੈ ਦੂਰਿ ॥

गावै को जापै दिसै दूरि ॥

कोई जीव उस निरंकार को स्वयं से दूर जानकर उसका यश गाता है।

ਗਾਵੈ ਕੋ ਵੇਖੈ ਹਾਦਰਾ ਹਦੂਰਿ ॥

गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥

कोई उसे अपने अंग-संग जानकर उसकी महिमा गाता है।

ਕਥਨਾ ਕਥੀ ਨ ਆਵੈ ਤੋਟਿ ॥

कथना कथी न आवै तोटि ॥

अनेकानेक ने उसकी कीर्ति का कथन किया है किन्तु फिर भी अन्त नहीं हुआ।

ਕਥਿ ਕਥਿ ਕਥੀ ਕੋਟੀ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ॥

कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥

करोड़ों जीवों ने उसके गुणों का कथन किया है, फिर भी उसका वास्तविक स्वरूप पाया नहीं जा सका।

ਦੇਦਾ ਦੇ ਲੈਦੇ ਥਕਿ ਪਾਹਿ ॥

देदा दे लैदे थकि पाहि ॥

अकाल पुरख दाता बनकर वह जीव को भौतिक पदार्थ (अथक) देता ही जा रहा है, (परंतु) जीव लेते हुए थक जाता है।

ਜੁਗਾ ਜੁਗੰਤਰਿ ਖਾਹੀ ਖਾਹਿ ॥

जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥

समस्त जीव युगों-युगों से इन पदार्थों का भोग करते आ रहे हैं।

ਹੁਕਮੀ ਹੁਕਮੁ ਚਲਾਏ ਰਾਹੁ ॥

हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥

आदेश करने वाले निरंकार की इच्छा से ही (सम्पूर्ण सृष्टि के) मार्ग चल रहे हैं।

ਨਾਨਕ ਵਿਗਸੈ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥੩॥

नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥

श्री गुरु नानक देव जी सृष्टि के जीवों को सचेत करते हुए कहते हैं कि वह निरंकार (वाहेगुरु) चिंता रहित होकर (इस संसार के जीवों पर) सदैव प्रसन्न रहता है। ॥ ३॥

ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚੁ ਨਾਇ ਭਾਖਿਆ ਭਾਉ ਅਪਾਰੁ ॥

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥

वाहेगुरु शाश्वत हैं, और उनका न्याय भी सनातन और अटल है; उनका संप्रेषण प्रेममय है, और उनका स्वरूप अनंत है।

ਆਖਹਿ ਮੰਗਹਿ ਦੇਹਿ ਦੇਹਿ ਦਾਤਿ ਕਰੇ ਦਾਤਾਰੁ ॥

आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥

हम उनकी कृपा के लिए बारंबार हाथ फैलाते हैं, और करुणामय वाहेगुरु असीम दान करते रहते हैं।

ਫੇਰਿ ਕਿ ਅਗੈ ਰਖੀਐ ਜਿਤੁ ਦਿਸੈ ਦਰਬਾਰੁ ॥

फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥

उस शाश्वत प्रभु की परम उपस्थिति का दर्शन करने हेतु हमें उनके चरणों में कौन-सी पवित्र भेंट समर्पित करनी चाहिए?

ਮੁਹੌ ਕਿ ਬੋਲਣੁ ਬੋਲੀਐ ਜਿਤੁ ਸੁਣਿ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥

मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥

जीभा से उसका गुणगान किस प्रकार का करें कि उस गुणगान को सुनकर वह अनंत शक्ति (ईश्वर) हमें प्रेम-प्रसाद प्रदान करे ?

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਵੇਲਾ ਸਚੁ ਨਾਉ ਵਡਿਆਈ ਵੀਚਾਰੁ ॥

अम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥

इनका उत्तर गुरु महाराज स्पष्ट करते हैं कि भोर के पूर्व(अमृत वेला) में जब आत्मा निर्मल होती है, उस पावन समय में ईश्वर के नाम का स्मरण करो और उसके गुणगान में मन को स्थिर करो।

ਕਰਮੀ ਆਵੈ ਕਪੜਾ ਨਦਰੀ ਮੋਖੁ ਦੁਆਰੁ ॥

करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥

सत्कर्मों के माध्यम से मनुष्य शरीर प्राप्त होता है, किंतु आत्मिक शुद्धि केवल भगवान् की कृपा से ही होती है।

ਨਾਨਕ ਏਵੈ ਜਾਣੀਐ ਸਭੁ ਆਪੇ ਸਚਿਆਰੁ ॥੪॥

नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥

हे नानक ! इस प्रकार का बोध ग्रहण करो कि वह सत्य स्वरूप निरंकार ही सर्वस्व है इससे मनुष्य के समस्त सन्देह मिट जाएँगे॥ ४ ॥

ਥਾਪਿਆ ਨ ਜਾਇ ਕੀਤਾ ਨ ਹੋਇ ॥

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥

वह परमात्मा किसी के द्वारा मूर्त रूप में स्थापित नहीं किया जा सकता, न ही उसे बनाया जा सकता है।

ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਇ ॥

आपे आपि निरंजनु सोइ ॥

वह मायातीत होकर स्वयं से ही प्रकाशमान है।

ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨਿ ਪਾਇਆ ਮਾਨੁ ॥

जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥

जिस मानव ने उस ईश्वर का नाम-स्मरण किया है, उसी ने उसके दरबार में सम्मान प्राप्त किया है।

ਨਾਨਕ ਗਾਵੀਐ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥

नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥

श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि उस गुणों के भण्डार निरंकार की अराधना करनी चाहिए।

ਗਾਵੀਐ ਸੁਣੀਐ ਮਨਿ ਰਖੀਐ ਭਾਉ ॥

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥

उसका गुणगान करते हुए, प्रशंसा सुनते हुए अपने हृदय में उसके प्रति श्रद्धा धारण करें।

ਦੁਖੁ ਪਰਹਰਿ ਸੁਖੁ ਘਰਿ ਲੈ ਜਾਇ ॥

दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥

जो इस मार्ग का अनुकरण करता है, उसके समस्त दुःख दूर हो जाते हैं और हृदय दिव्य शांति से भर जाता है।

ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਦੰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੇਦੰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥

गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥

गुरु के मुँह से निकला हुआ शब्द ही वेदों का ज्ञान है, वही उपदेश रूपी ज्ञान सर्वत्र विद्यमान है।

ਗੁਰੁ ਈਸਰੁ ਗੁਰੁ ਗੋਰਖੁ ਬਰਮਾ ਗੁਰੁ ਪਾਰਬਤੀ ਮਾਈ ॥

गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥

गुरु ही शिव, विष्णु, ब्रह्मा और माता पार्वती है, क्योंकि गुरु परम शक्ति हैं।

ਜੇ ਹਉ ਜਾਣਾ ਆਖਾ ਨਾਹੀ ਕਹਣਾ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥

जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥

श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि उस सर्गुण स्वरूप परम पिता परमेश्वर को अपनी वाणी से व्यक्त नहीं किया जा सकता क्योंकि उसकी महिमा अपरम्पार है उसका वर्णन हमारी सुक्ष्म बुद्धि द्वारा नहीं किया जा सकता।।

ਗੁਰਾ ਇਕ ਦੇਹਿ ਬੁਝਾਈ ॥

गुरा इक देहि बुझाई ॥

हे सतगुरु! कृपा कर मुझे वह विवेक प्रदान करें

ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਇਕੁ ਦਾਤਾ ਸੋ ਮੈ ਵਿਸਰਿ ਨ ਜਾਈ ॥੫॥

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥

कि जो समस्त जीवों का एकमात्र दाता है, मैं कभी भी उसे भूलूँ ॥ ५॥

ਤੀਰਥਿ ਨਾਵਾ ਜੇ ਤਿਸੁ ਭਾਵਾ ਵਿਣੁ ਭਾਣੇ ਕਿ ਨਾਇ ਕਰੀ ॥

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥

तीर्थ-स्नान भी तभी किया जा सकता है यदि ऐसा करना उसे स्वीकार हो, उस अकाल पुरख की इच्छा के बिना मैं तीर्थ-स्नान करके क्या करूँगा, क्योंकि फिर तो यह सब अर्थहीन ही होगा।

ਜੇਤੀ ਸਿਰਠਿ ਉਪਾਈ ਵੇਖਾ ਵਿਣੁ ਕਰਮਾ ਕਿ ਮਿਲੈ ਲਈ ॥

जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥

उस रचयिता की पैदा की हुई जितनी भी सृष्टि मैं देखता हूँ, उसमें कर्मों के बिना न कोई जीव

कुछ प्राप्त करता है और न ही उसे कुछ मिलता है।

ਮਤਿ ਵਿਚਿ ਰਤਨ ਜਵਾਹਰ ਮਾਣਿਕ ਜੇ ਇਕ ਗੁਰ ਕੀ ਸਿਖ ਸੁਣੀ ॥

मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥

यदि गुरु से प्राप्त ज्ञान को हम अपने जीवन में धारण कर ले तो हमारी बुद्धि हीरे-जवाहरात जैसे पद्धार्थों से परिपूर्ण हो जाए भाव हीरे माणिक्य जैसे शोभनीय पद्धार्थों सा हमारा जीवन भी शोभनीय हो जाए।

ਗੁਰਾ ਇਕ ਦੇਹਿ ਬੁਝਾਈ ॥

गुरा इक देहि बुझाई ॥

हे गुरु जी ! मुझे केवल यही बोध करवा दो कि

ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਇਕੁ ਦਾਤਾ ਸੋ ਮੈ ਵਿਸਰਿ ਨ ਜਾਈ ॥੬॥

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥

सृष्टि के समस्त प्राणियों को देने वाला निरंकार मुझ से विस्मृत न हो ॥ ६ ॥

ਜੇ ਜੁਗ ਚਾਰੇ ਆਰਜਾ ਹੋਰ ਦਸੂਣੀ ਹੋਇ ॥

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥

यदि किसी मनुष्य अथवा योगी की योग-साधना करके चार युगों से दस गुणा अधिक, अर्थात्-चालीस युगों की आयु हो जाए।

ਨਵਾ ਖੰਡਾ ਵਿਚਿ ਜਾਣੀਐ ਨਾਲਿ ਚਲੈ ਸਭੁ ਕੋਇ ॥

नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥

नवखण्डों (पौराणिक धर्म-ग्रन्थों में वर्णित इलावर्त, किंपुरुष, भद्र, भरत, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्यक और कुरु) में उसकी कीर्ति हो, सभी उसके सम्मान में साथ चलें।

ਚੰਗਾ ਨਾਉ ਰਖਾਇ ਕੈ ਜਸੁ ਕੀਰਤਿ ਜਗਿ ਲੇਇ ॥

चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥

संसार में प्रख्यात पुरुष बनकर अपनी शोभा का गान करवाता रहे।

ਜੇ ਤਿਸੁ ਨਦਰਿ ਨ ਆਵਈ ਤ ਵਾਤ ਨ ਪੁਛੈ ਕੇ ॥

जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥

यदि अकाल पुरख की कृपादृष्टि में वह मनुष्य नहीं आया तो किसी ने भी उसकी कुशल-क्षेम नहीं पूछनी।

ਕੀਟਾ ਅੰਦਰਿ ਕੀਟੁ ਕਰਿ ਦੋਸੀ ਦੋਸੁ ਧਰੇ ॥

कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥

इतने वैभव तथा मान-सम्मान होने के पश्चात् भी ऐसा मनुष्य परमात्मा के समक्ष कीटों में क्षुद्र कीट अर्थात् अत्यंत अधम समझा जाता है, दोषयुक्त मनुष्य भी उसे दोषी समझेंगे

ਨਾਨਕ ਨਿਰਗੁਣਿ ਗੁਣੁ ਕਰੇ ਗੁਣਵੰਤਿਆ ਗੁਣੁ ਦੇ ॥

नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥

गुरु नानक जी का कथन है कि वह असीम-शक्ति निरंकार गुणहीन मनुष्यों को गुण प्रदान करते हैं और गुणी मनुष्यों को अतिरिक्त गुणवान बनाते हैं।

ਤੇਹਾ ਕੋਇ ਨ ਸੁਝਈ ਜਿ ਤਿਸੁ ਗੁਣੁ ਕੋਇ ਕਰੇ ॥੭॥

तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥

परंतु ऐसा कोई और दिखाई नहीं देता, जो उस गुणों से परिपूर्ण परमात्मा को कोई गुण प्रदान कर सके। ॥ ७ ॥

ਸੁਣਿਐ ਸਿਧ ਪੀਰ ਸੁਰਿ ਨਾਥ ॥

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥

परमात्मा का नाम सुनने, अर्थात्-उसकी कीर्ति में अपने हृदय को लगाने के कारण ही सिद्ध, पीर, देव तथा नाथ इत्यादि को परम-पद की प्राप्ति हुई है।

ਸੁਣਿਐ ਧਰਤਿ ਧਵਲ ਆਕਾਸ ॥

सुणिऐ धरति धवल आकास ॥

नाम सुनने से ही पृथ्वी, उसको धारण करने वाले वृषभ (पौराणिक धर्म ग्रन्थों के अनुसार जो धौला बैल इस भू-लोक को अपने सीगों पर टिकाए हुए है) तथा आकाश के स्थायित्व की शक्ति का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

ਸੁਣਿਐ ਦੀਪ ਲੋਅ ਪਾਤਾਲ ॥

सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥

नाम सुनने से शाल्मलि, क्रौंच, जम्बू, पलक आदि सप्त द्वीप, भूः, भवः, स्वः आदि चौदह लोक तथा अतल, वितल, सुतल आदि सातों पातालों की व्यापकता प्राप्त होती है।

ਸੁਣਿਐ ਪੋਹਿ ਨ ਸਕੈ ਕਾਲੁ ॥

सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥

नाम सुनने वाले को काल स्पर्श भी नहीं कर सकता।

ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਸਦਾ ਵਿਗਾਸੁ ॥

नानक भगता सदा विगासु ॥

हे नानक ! प्रभु के भक्त के हृदय में सदैव आनंद का प्रकाश रहता है,

ਸੁਣਿਐ ਦੂਖ ਪਾਪ ਕਾ ਨਾਸੁ ॥੮॥

सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥

परमात्मा का नाम सुनने से समस्त दुःखों व दुष्कर्मों का नाश होता है॥ ८॥

ਸੁਣਿਐ ਈਸਰੁ ਬਰਮਾ ਇੰਦੁ ॥

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥

परमात्मा का नाम सुनने से ही शिव, ब्रह्मा तथा इन्द्र आदि उत्तम पदवी को प्राप्त कर सके हैं।

ਸੁਣਿਐ ਮੁਖਿ ਸਾਲਾਹਣ ਮੰਦੁ ॥

सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥

मंदे लोग यानी कि बुरे कर्म करने वाले मनुष्य भी नाम को श्रवण करने मात्र से प्रशंसा के योग्य हो जाते हैं।

ਸੁਣਿਐ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਤਨਿ ਭੇਦ ॥

सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥

नाम के साथ जुड़ने से योगादि तथा शरीर के विशुद्ध, मणिपूरक, मूलाधार आदि षट्-चक्र के रहस्य का बोध हो जाता है।

ਸੁਣਿਐ ਸਾਸਤ ਸਿਮ੍ਰਿਤਿ ਵੇਦ ॥

सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥

नाम सुनने से षट्-शास्त्र, (सांख्य, योग, न्याय आदि), सत्ताईस स्मृतियों (मनु, याज्ञवल्कय स्मृति आदि) तथा चारों वेदों का ज्ञान उपलब्ध होता है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਸਦਾ ਵਿਗਾਸੁ ॥

नानक भगता सदा विगासु ॥

हे नानक ! संत जनों के हृदय में सदैव आनंद का प्रकाश रहता है।

ਸੁਣਿਐ ਦੂਖ ਪਾਪ ਕਾ ਨਾਸੁ ॥੯॥

सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥

परमात्मा का नाम सुनने से समस्त दुःखों व दुष्कर्मों का नाश होता है ॥ ९ ॥

ਸੁਣਿਐ ਸਤੁ ਸੰਤੋਖੁ ਗਿਆਨੁ ॥

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥

नाम सुनने से मनुष्य को सत्य, संतोष व ज्ञान जैसे मूल धर्मों की प्राप्ति होती है।

ਸੁਣਿਐ ਅਠਸਠਿ ਕਾ ਇਸਨਾਨੁ ॥

सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥

नाम को सुनने मात्र से समस्त तीर्थों में श्रेष्ठ अठसठ तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त हो जाता है।

ਸੁਣਿਐ ਪੜਿ ਪੜਿ ਪਾਵਹਿ ਮਾਨੁ ॥

सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥

ईश्वर की महिमा का श्रवण करने से भक्तों को वह आध्यात्मिक प्रतिष्ठा प्राप्त होती है, जो शास्त्रों के गंभीर अभ्यास से मिलती है।

ਸੁਣਿਐ ਲਾਗੈ ਸਹਜਿ ਧਿਆਨੁ ॥

सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥

पवित्र नाम का श्रवण करते ही साधक का मन स्वाभाविक रूप से उसी में लीन होने लगता है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਸਦਾ ਵਿਗਾਸੁ ॥

नानक भगता सदा विगासु ॥

हे नानक ! प्रभु के भक्तों को सदैव आत्मिक आनंद का प्रकाश रहता है।

ਸੁਣਿਐ ਦੂਖ ਪਾਪ ਕਾ ਨਾਸੁ ॥੧੦॥

सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥

परमात्मा का नाम सुनने से समस्त दुःखों व दुष्कर्मों का नाश होता है॥ १०॥

ਸੁਣਿਐ ਸਰਾ ਗੁਣਾ ਕੇ ਗਾਹ ॥

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥

नाम सुनने से गुणों के सागर श्री हरि में लीन हुआ जा सकता है।

ਸੁਣਿਐ ਸੇਖ ਪੀਰ ਪਾਤਿਸਾਹ ॥

सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥

नाम-श्रवण के प्रभाव से ही शेख, पीर और बादशाह अपने पद पर शोभायमान हैं।

ਸੁਣਿਐ ਅੰਧੇ ਪਾਵਹਿ ਰਾਹੁ ॥
सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥
अज्ञानी मनुष्य प्रभु-भक्ति का मार्ग नाम-श्रवण करने से ही प्राप्त कर सकते हैं।

ਸੁਣਿਐ ਹਾਥ ਹੋਵੈ ਅਸਗਾਹੁ ॥
सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥
इस भव-सागर की अथाह गहराई को जान पाना भी नाम-श्रवण की शक्ति से सम्भव हो सकता है।

ਨਾਨਕ ਭਗਤਾ ਸਦਾ ਵਿਗਾਸੁ ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
हे नानक ! सद्-पुरुषों के भीतर सदैव आनंद का प्रकाश रहता है।

ਸੁਣਿਐ ਦੂਖ ਪਾਪ ਕਾ ਨਾਸੁ ॥੧੧॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥
परमात्मा का नाम सुनने से समस्त दुःखों व दुष्कर्मों का नाश होता है।॥ ११॥

ਮੰਨੇ ਕੀ ਗਤਿ ਕਹੀ ਨ ਜਾਇ ॥
मंने की गति कही न जाइ ॥
ईश्वर में सच्चा विश्वास रखने वाले की मनःस्थिति शब्दों से परे होती है।

ਜੇ ਕੋ ਕਹੈ ਪਿਛੈ ਪਛੁਤਾਇ ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
जो भी उसकी अवस्था का वर्णन करता है तो उसे अंत में पछताना पड़ता है क्योंकि ऐसा कर लेना सरल नहीं है, ऐसी कोई रचना नहीं जो नाम से प्राप्त होने वाले आनन्द का रहस्योद्घाटन कर सके।जो भी उस अनंत अवस्था का वर्णन करता है, उसे अंत में पश्चाताप होता है, क्योंकि नाम से उत्पन्न आनंद के रहस्यों को प्रकट करने के लिए कोई रचना पर्याप्त नहीं है।

ਕਾਗਦਿ ਕਲਮ ਨ ਲਿਖਣਹਾਰੁ ॥
कागदि कलम न लिखणहारु ॥
ऐसी अवस्था को यदि लिखा भी जाए तो इसके लिए न काग़ज़ है, न कलम और न ही लिखने वाला कोई जिज्ञासु।

ਮੰਨੇ ਕਾ ਬਹਿ ਕਰਨਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥
मंने का बहि करनि वीचारु ॥
जो वाहेगुरु में लीन होने वाले का विचार कर सकें।

ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹੋਇ ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
परमेश्वर का नाम सर्वोत्कृष्ट है तथा माया से रहित एवं शाश्वत है।

ਜੇ ਕੋ ਮੰਨਿ ਜਾਣੈ ਮਨਿ ਕੋਇ ॥੧੨॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥
यदि कोई उसे अपने हृदय में बसा कर उसका चिन्तन करे ॥१२॥

ਮੰਨੈ ਸੁਰਤਿ ਹੋਵੈ ਮਨਿ ਬੁਧਿ ॥
मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥
परमात्मा का नाम सुनकर उसका चिन्तन करने से मन और बुद्धि में उत्तम प्रीति पैदा हो जाती है।

ਮੰਨੈ ਸਗਲ ਭਵਣ ਕੀ ਸੁਧਿ ॥
मंनै सगल भवण की सुधि ॥
चिन्तन करने से सम्पूर्ण सृष्टि का ज्ञान-बोध होता है।

ਮੰਨੈ ਮੁਹਿ ਚੋਟਾ ਨਾ ਖਾਇ ॥
मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥
इस संसार में प्रभु का सिमरन करने वाले मनुष्य सांसारिक कष्टों अथवा परलोक में यमदूत की यातनाओं से पीड़ित नहीं होता है ।

ਮੰਨੈ ਜਮ ਕੈ ਸਾਥਿ ਨ ਜਾਇ ॥
मंनै जम कै साथि न जाइ ॥
ईश्वर का नाम सिमरन करने वाला मनुष्य अंत समय में यमदूतों के साथ नरक को नहीं जाता अपितु उसे स्वयं परमेश्वर के दूत स्वर्ग-लोक लेकर जाते हैं। भाव परमात्मा का नाम जपने वालों पर प्रभु की ऐसी कृपा होती है कि उन्हें यमदूतों जैसी बला भी हाथ नहीं लगा सकती।

ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹੋਇ ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
परमात्मा का नाम बहुत ही श्रेष्ठ एवं मायातीत है।

ਜੇ ਕੋ ਮੰਨਿ ਜਾਣੈ ਮਨਿ ਕੋਇ ॥੧੩॥

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥

यदि कोई उसे अपने हृदय में लीन करके उसका चिन्तन करे॥ १३॥

ਮੰਨੈ ਮਾਰਗਿ ਠਾਕ ਨ ਪਾਇ ॥

मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥

निरंकार के नाम का चिन्तन करने वाले मानव जीव के मार्ग में किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं आती।

ਮੰਨੈ ਪਤਿ ਸਿਉ ਪਰਗਟੁ ਜਾਇ ॥

मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥

चिन्तनशील मनुष्य संसार में शोभा का पात्र होता है।

ਮੰਨੈ ਮਗੁ ਨ ਚਲੈ ਪੰਥੁ ॥

मंनै मगु न चलै पंथु ॥

ऐसा व्यक्ति दुविधापूर्ण मार्ग अथवा साम्प्रदायिकता को छोड़ धर्म-पथ पर चलता है।

ਮੰਨੈ ਧਰਮ ਸੇਤੀ ਸਨਬੰਧੁ ॥

मंनै धरम सेती सनबंधु ॥

चिन्तनशील का धर्म-कार्यों से सुदृढ़ सम्बन्ध होता है।

ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹੋਇ ॥

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥

परमात्मा का नाम बहुत ही श्रेष्ठ एवं मायातीत है।

ਜੇ ਕੋ ਮੰਨਿ ਜਾਣੈ ਮਨਿ ਕੋਇ ॥੧੪॥

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥

यदि कोई उसे अपने हृदय में लीन करके उसका चिन्तन करे ॥ १४ ॥

ਮੰਨੈ ਪਾਵਹਿ ਮੋਖੁ ਦੁਆਰੁ ॥

मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥

इस संसार रूपी सागर में मोक्ष का एकमात्र साधन उस परमेश्वर का नाम सिमरन पार उतारने वाली नौका है अर्थात् मुक्ति दिलाने वाला है।

ਮੰਨੈ ਪਰਵਾਰੈ ਸਾਧਾਰੁ ॥
मंनै परवारै साधारु ॥
चिन्तन करने वाले अपने समस्त परिजनों को भी उस नाम का आश्रय देते हैं।

ਮੰਨੈ ਤਰੈ ਤਾਰੇ ਗੁਰੁ ਸਿਖ ॥
मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥
चिन्तनशील गुरसिख स्वयं तो इस भव-सागर को पार करता ही है तथा अन्य संगियों को भी पार करवा देता है।

ਮੰਨੈ ਨਾਨਕ ਭਵਹਿ ਨ ਭਿਖ ॥
मंनै नानक भवहि न भिख ॥
हे नानक ! चिन्तन करने वाला मानव जीव, दर-दर का भिखारी नहीं बनता।

ਐਸਾ ਨਾਮੁ ਨਿਰੰਜਨੁ ਹੋਇ ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
परमात्मा का नाम बहुत ही श्रेष्ठ एवं मायातीत है।

ਜੇ ਕੋ ਮੰਨਿ ਜਾਣੈ ਮਨਿ ਕੋਇ ॥੧੫॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥
यदि कोई उसे अपने हृदय में लीन करके उसका चिन्तन करे ॥ १५॥

ਪੰਚ ਪਰਵਾਣ ਪੰਚ ਪਰਧਾਨੁ ॥
पंच परवाण पंच परधानु ॥
जिन्होंने प्रभु-नाम का चिन्तन किया है वे श्रेष्ठ संतजन निरंकार के द्वार पर स्वीकृत होते हैं, वे ही वहाँ पर प्रमुख होते हैं।

ਪੰਚੇ ਪਾਵਹਿ ਦਰਗਹਿ ਮਾਨੁ ॥
पंचे पावहि दरगहि मानु ॥
ऐसे गुरुमुख प्यारे अकाल पुरुष की सभा में सम्मान पाते हैं।

ਪੰਚੇ ਸੋਹਹਿ ਦਰਿ ਰਾਜਾਨੁ ॥
पंचे सोहहि दरि राजानु ॥
जिन प्रभु के प्रेमियों ने उसके नाम रूपी रस का अमृतपान किया है ऐसे सद्-पुरुष उसके

दरबार में भाव उस परमात्मा के घर में शोभा पाते हैं। ईश्वर के दरबार में केवल हमारा नामरूपी धन ही साथ जाता है।

ਪੰਚਾ ਕਾ ਗੁਰੁ ਏਕੁ ਧਿਆਨੁ ॥
पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥
सद्‌गुणी मानव का ध्यान उस एक सतगुरु (निरंकार) में ही दृढ़ रहता है।

ਜੇ ਕੋ ਕਹੈ ਕਰੈ ਵੀਚਾਰੁ ॥
जे को कहै करै वीचारु ॥
यदि कोई व्यक्ति उस सृजनहार के बारे में कहना चाहे अथवा उसकी रचना का लेखा करे

ਕਰਤੇ ਕੈ ਕਰਣੈ ਨਾਹੀ ਸੁਮਾਰੁ ॥
करते कै करणै नाही सुमारु ॥
तो उस रचयिता की प्रकृति का आकलन नहीं किया जा सकता।

ਧੌਲੁ ਧਰਮੁ ਦਇਆ ਕਾ ਪੂਤੁ ॥
धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥
निरंकार द्वारा रची गई सृष्टि धर्म रूपी वृषभ (धौला बैल) ने अपने ऊपर टिका कर रखी हुई है जो कि दया का पुत्र है (क्योंकि मन में दया-भाव होगा तभी धर्म-कार्य इस मानव जीव से सम्भव होगा)।

ਸੰਤੋਖੁ ਥਾਪਿ ਰਖਿਆ ਜਿਨਿ ਸੂਤਿ ॥
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥
जिसे संतोष रूपी सूत्र के साथ बांधा हुआ है।

ਜੇ ਕੋ ਬੁਝੈ ਹੋਵੈ ਸਚਿਆਰੁ ॥
जे को बुझै होवै सचिआरु ॥
यदि कोई परमात्मा के इस रहस्य को जान ले तो वह सत्यनिष्ठ हो सकता है।

ਧਵਲੈ ਉਪਰਿ ਕੇਤਾ ਭਾਰੁ ॥
धवलै उपरि केता भारु ॥
कितना बोझ है, वह कितना बोझ उठाने की समर्थता रखता है।

ਧਰਤੀ ਹੋਰੁ ਪਰੈ ਹੋਰੁ ਹੋਰੁ ॥
धरती होरु परै होरु होरु ॥
क्योंकि इस धरती पर सृजनहार ने जो रचना की है वह परे से परे है, अनन्त है।

ਤਿਸ ਤੇ ਭਾਰੁ ਤਲੈ ਕਵਣੁ ਜੋਰੁ ॥
तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥
फिर उस बैल का बोझ किस शक्ति पर आश्रित है।

ਜੀਅ ਜਾਤਿ ਰੰਗਾ ਕੇ ਨਾਵ ॥
जीअ जाति रंगा के नाव ॥
सृजनहार की इस रचना में अनेक जातियों, रंगों तथा अलग-अलग नाम से जाने जाने वाले लोग उपस्थित हैं।

ਸਭਨਾ ਲਿਖਿਆ ਵੁੜੀ ਕਲਾਮ ॥
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥
जिनके मस्तिष्क पर परमात्मा की आज्ञा में चलने वाली कलम से कर्मों का लेखा लिखा गया है।

ਏਹੁ ਲੇਖਾ ਲਿਖਿ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ॥
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥
यदि किसी को यह दिव्य लेखनी प्राप्त हो, जिससे वह इस गूढ़ सत्य का वर्णन कर सके,

ਲੇਖਾ ਲਿਖਿਆ ਕੇਤਾ ਹੋਇ ॥
लेखा लिखिआ केता होइ ॥
यदि उस लेखे को लिपिबद्ध भी किया जाए, तो कल्पना कीजिए— वह विवरण कितना असीमित और अपार होगा।

ਕੇਤਾ ਤਾਣੁ ਸੁਆਲਿਹੁ ਰੂਪੁ ॥
केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥
परमेश्वर की अपरिमित शक्ति और उसकी दिव्य सृष्टि की व्यापकता कितनी अनंत है— इसे कौन जान सकता है?

ਕੇਤੀ ਦਾਤਿ ਜਾਣੈ ਕੌਣੁ ਕੂਤੁ ॥
केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥
उसकी कितनी कृपा है, ऐसा कौन है जो उसका सम्पूर्ण अनुमान लगा सकता है।

ਕੀਤਾ ਪਸਾਉ ਏਕੋ ਕਵਾਉ ॥
कीता पसाउ एको कवाउ ॥
अकाल पुरख के मात्र एक शब्द से समस्त सृष्टि का प्रसार हुआ है।

ਤਿਸ ਤੇ ਹੋਏ ਲਖ ਦਰੀਆਉ ॥
तिस ते होए लख दरीआउ ॥
उस एक शब्द रूपी आदेश से ही सृष्टि में एक से अनेक जीव-जन्तु, तथा अन्य पदार्थों के प्रवाह चल पड़े हैं।

ਕੁਦਰਤਿ ਕਵਣ ਕਹਾ ਵੀਚਾਰੁ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
इसलिए मुझ में इतनी बुद्धि कहाँ कि मैं उस अकथनीय प्रभु की समर्थता का विचार कर सकूँ।

ਵਾਰਿਆ ਨ ਜਾਵਾ ਏਕ ਵਾਰ ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
हे अनन्त स्वरूप ! मैं इतना असमर्थ और निर्बल हूँ कि एक बार भी पूर्ण रूप से आपके चरणों में समर्पित होने की सामर्थ्य नहीं रखता।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸਾਈ ਭਲੀ ਕਾਰ ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
जो तुझे अच्छा लगता है वही कार्य श्रेष्ठ है।

ਤੂ ਸਦਾ ਸਲਾਮਤਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥੧੬॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥
हे निरंकार ! हे पारब्रह्म ! आप सदा शाश्वत स्वरूप है ॥ १६॥

ਅਸੰਖ ਜਪ ਅਸੰਖ ਭਾਉ ॥
असंख जप असंख भाउ ॥
इस सृष्टि में असंख्य लोग उस सृजनहार का जाप करते हैं, असंख्य ही उससे प्रीति रखने वाले हैं।

ਅਸੰਖ ਪੂਜਾ ਅਸੰਖ ਤਪ ਤਾਉ ॥
असंख पूजा असंख तप ताउ ॥
असंख्य उसकी अर्चना करते हैं, असंख्य तपी तपस्या कर रहे हैं।

ਅਸੰਖ ਗਰੰਥ ਮੁਖਿ ਵੇਦ ਪਾਠ ॥

असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥

असंख्य लोग धार्मिक ग्रंथों व वेदों आदि का अपने मुख द्वारा पाठ कर रहे हैं।

ਅਸੰਖ ਜੋਗ ਮਨਿ ਰਹਹਿ ਉਦਾਸ ॥

असंख जोग मनि रहहि उदास ॥

असंख्य ही योग-साधना में लीन रह कर मन को आसक्तियों से मुक्त रखते हैं।

ਅਸੰਖ ਭਗਤ ਗੁਣ ਗਿਆਨ ਵੀਚਾਰ ॥

असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥

असंख्य साधक परमेश्वर की महिमा और दिव्य ज्ञान का नित्य मनन और स्मरण करते हैं।

ਅਸੰਖ ਸਤੀ ਅਸੰਖ ਦਾਤਾਰ ॥

असंख सती असंख दातार ॥

इस जगत में असंख्य पुण्यात्माएँ एवं अनगिनत परोपकार में संलग्न महापुरुष विद्यमान हैं।

ਅਸੰਖ ਸੂਰ ਮੁਹ ਭਖ ਸਾਰ ॥

असंख सूर मुह भख सार ॥

असंख्य शूरवीर रणभूमि में शत्रु का सामना करते हुए लोहे के तीव्र अस्त्रों के प्रहारों को भी धैर्यपूर्वक सहते हैं।

ਅਸੰਖ ਮੋਨਿ ਲਿਵ ਲਾਇ ਤਾਰ ॥

असंख मोनि लिव लाइ तार ॥

असंख्य मानव जीव मौन धारण करके एकाग्रचित होकर उस अकाल-पुरख में लीन रहते हैं।

ਕੁਦਰਤਿ ਕਵਣ ਕਹਾ ਵੀਚਾਰੁ ॥

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥

इसलिए मुझ में इतनी बुद्धि कहाँ कि मैं उस अकथनीय प्रभु की समर्थता का विचार कर सकूँ।

ਵਾਰਿਆ ਨ ਜਾਵਾ ਏਕ ਵਾਰ ॥

वारिआ न जावा एक वार ॥

हे अनन्त स्वरूप ! मेरी स्थिति इतनी क्षीण है कि मैं स्वयं को आपके चरणों में एक बार भी समर्पित करने योग्य नहीं समझता।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸਾਈ ਭਲੀ ਕਾਰ ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
जो आपको भला लगता है वही कार्य मेरे लिए श्रेष्ठ है।

ਤੂ ਸਦਾ ਸਲਾਮਤਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥੧੭॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥
हे निरंकार ! हे पारब्रह्म ! आप सदा शाश्वत रूप है।॥ १७ ॥

ਅਸੰਖ ਮੂਰਖ ਅੰਧ ਘੋਰ ॥
असंख मूरख अंध घोर ॥
इस सृष्टि में असंख्य मनुष्य विमूढ़ तथा गहन अज्ञानी हैं।

ਅਸੰਖ ਚੋਰ ਹਰਾਮਖੋਰ ॥
असंख चोर हरामखोर ॥
असंख्य चोर तथा अभक्ष्य खाने वाले हैं, जो दूसरों का माल चुरा कर खाते हैं।

ਅਸੰਖ ਅਮਰ ਕਰਿ ਜਾਹਿ ਜੋਰ ॥
असंख अमर करि जाहि जोर ॥
असंख्य ही ऐसे हैं जो अन्य लोगों पर कठोर आचरण से अत्याचारी शासन करके इस संसार को त्याग जाते हैं।

ਅਸੰਖ ਗਲਵਢ ਹਤਿਆ ਕਮਾਹਿ ॥
असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥
असंख्य अधर्मी मनुष्य जो दूसरों का गला काट कर हत्या का पाप कमा रहे हैं।

ਅਸੰਖ ਪਾਪੀ ਪਾਪੁ ਕਰਿ ਜਾਹਿ ॥
असंख पापी पापु करि जाहि ॥
असंख्य ही पापी इस संसार से पाप करते हुए चले जाते हैं।

ਅਸੰਖ ਕੂੜਿਆਰ ਕੂੜੇ ਫਿਰਾਹਿ ॥
असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥
असंख्य ही झूठा स्वभाव रखने वाले मिथ्या वचन बोलते फिरते हैं।

ਅਸੰਖ ਮਲੇਛ ਮਲੁ ਭਖਿ ਖਾਹਿ ॥

असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥

असंख्य मानव ऐसे हैं जो मलिन बुद्धि होने के कारण विष्टा का भोजन खाते हैं।

ਅਸੰਖ ਨਿੰਦਕ ਸਿਰਿ ਕਰਹਿ ਭਾਰੁ ॥

असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥

असंख्य लोग दूसरों की निन्दा करके अपने सिर पर पाप का बोझ रखते हैं।

ਨਾਨਕੁ ਨੀਚੁ ਕਹੈ ਵੀਚਾਰੁ ॥

नानकु नीचु कहै वीचारु ॥

श्री गुरु नानक देव ने पापी एवं कुकर्मी, अज्ञानी, अभक्ष्य पद्धार्थ ग्रहण करने वाले, दुराचारी एवं अधर्मी लोगों के चरित्र का वर्णन करते हुए स्वयं को इनके समक्ष बहुत तुच्छ बताया है ।

ਵਾਰਿਆ ਨ ਜਾਵਾ ਏਕ ਵਾਰ ॥

वारिआ न जावा एक वार ॥

हे अनन्त स्वरूप ! मेरी स्थिति इतनी क्षीण है कि मैं स्वयं को आपके चरणों में एक बार भी समर्पित करने योग्य नहीं समझता।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸਾਈ ਭਲੀ ਕਾਰ ॥

जो तुधु भावै साई भली कार ॥

जो आपको भला लगता है वही कार्य मेरे लिए श्रेष्ठ है।

ਤੂ ਸਦਾ ਸਲਾਮਤਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥੧੮॥

तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥

हे निरंकार ! हे पारब्रह्म ! आप सदा शाश्वत रूप है॥ १८॥

ਅਸੰਖ ਨਾਵ ਅਸੰਖ ਥਾਵ ॥

असंख नाव असंख थाव ॥

उस सृजनहार की सृष्टि में असंख्य ही नाम तथा असंख्य ही स्थान वाले जीव विचरण कर रहे हैं; अथवा इस सृष्टि में अकाल-पुरख के अनेकानेक नाम हैं तथा अनेकानेक ही स्थान हैं, जहाँ पर परमात्मा का वास रहता है।

ਅਗੰਮ ਅਗੰਮ ਅਸੰਖ ਲੋਅ ॥

अगम अगम असंख लोअ ॥

असंख्य ही अकल्पनीय लोक हैं।

ਅਸੰਖ ਕਹਹਿ ਸਿਰਿ ਭਾਰੁ ਹੋਇ ॥

असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥

किन्तु जो मनुष्य उसकी रचना का गणित करते हुए 'असंख्य' शब्द का प्रयोग करते हैं उनके सिर पर भी भार पड़ता है।

ਅਖਰੀ ਨਾਮੁ ਅਖਰੀ ਸਾਲਾਹ ॥

अखरी नामु अखरी सालाह ॥

शब्दों द्वारा ही उस निरंकार के नाम को जपा जा सकता है, शब्दों से ही उसका गुणगान किया जा सकता है।

ਅਖਰੀ ਗਿਆਨੁ ਗੀਤ ਗੁਣ ਗਾਹ ॥

अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥

दिव्य वाणी के माध्यम से ही परमात्मा का बोध होता है, उनकी स्तुति की जाती है और उनके गुणों का चिंतन संभव होता है।

ਅਖਰੀ ਲਿਖਣੁ ਬੋਲਣੁ ਬਾਣਿ ॥

अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥

शब्द ही वह अमृत है जिसके माध्यम से परम सत्य की झलक मिलती है; वाणी हो या लेख, दोनों का सार शब्द-रूप ही है।

ਅਖਰਾ ਸਿਰਿ ਸੰਜੋਗੁ ਵਖਾਣਿ ॥

अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥

शब्द वह दिव्य माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य के भाग्य का ज्ञान होता है;

ਜਿਨਿ ਏਹਿ ਲਿਖੇ ਤਿਸੁ ਸਿਰਿ ਨਾਹਿ ॥

जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥

लेकिन जिस ईश्वर ने सबका भाग्य लिखा है, वह परमेश्वर स्वयं नियति से परे हैं।

ਜਿਵ ਫੁਰਮਾਏ ਤਿਵ ਤਿਵ ਪਾਹਿ ॥

जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥

अकाल-पुरख जिस प्रकार मनुष्य के कर्मों के अनुसार आदेश करता है, वैसे ही वह अपने कर्मों

को भोगता है।

ਜੇਤਾ ਕੀਤਾ ਤੇਤਾ ਨਾਉ ॥
जेता कीता तेता नाउ ॥
सृजनहार ने इस सृष्टि का जितना प्रसार किया है, वह समस्त नाम-रूप ही है।

ਵਿਣੁ ਨਾਵੈ ਨਾਹੀ ਕੋ ਥਾਉ ॥
विणु नावै नाही को थाउ ॥
कोई भी स्थान उसके नाम से रिक्त नहीं है।

ਕੁਦਰਤਿ ਕਵਣ ਕਹਾ ਵੀਚਾਰੁ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
इसलिए मुझ में इतनी बुद्धि कहाँ कि मैं उस अकथनीय प्रभु की समर्थता का विचार कर सकूँ।

ਵਾਰਿਆ ਨ ਜਾਵਾ ਏਕ ਵਾਰ ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
हे अनन्त स्वरूप ! मेरी स्थिति इतनी क्षीण है कि मैं स्वयं को आपके चरणों में एक बार भी समर्पित करने योग्य नहीं समझता।

ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵੈ ਸਾਈ ਭਲੀ ਕਾਰ ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
जो आपको भला लगता है वही कार्य मेरे लिए श्रेष्ठ है।

ਤੂ ਸਦਾ ਸਲਾਮਤਿ ਨਿਰੰਕਾਰ ॥੧੯॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥
हे निरंकार ! हे पारब्रह्म ! आप सदा शाश्वत रूप है।॥ १९ ॥

ਭਰੀਐ ਹਥੁ ਪੈਰੁ ਤਨੁ ਦੇਹ ॥
भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥
यदि यह शरीर, हाथ-पैर अथवा कोई अन्य अंग मलिन हो जाए

ਪਾਣੀ ਧੋਤੈ ਉਤਰਸੁ ਖੇਹ ॥
पाणी धोतै उतरसु खेह ॥
तो पानी से धो लेने से उसकी गन्दगी व मिट्टी शुद्ध हो जाती है।

ਮੂਤ ਪਲੀਤੀ ਕਪੜੁ ਹੋਇ ॥

मूत पलीती कपड़ु होइ ॥

यदि कोई वस्त्र मलमूत्र आदि से अपवित्र हो जाए

ਦੇ ਸਾਬੂਣੁ ਲਈਐ ਓਹੁ ਧੋਇ ॥

दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥

तो उसे साबुन के साथ धो लिया जाता है।

ਭਰੀਐ ਮਤਿ ਪਾਪਾ ਕੈ ਸੰਗਿ ॥

भरीऐ मति पापा कै संगि ॥

यदि मनुष्य की बुद्धि दुष्कर्मों के करने से मलिन हो जाए

ਓਹੁ ਧੋਪੈ ਨਾਵੈ ਕੈ ਰੰਗਿ ॥

ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥

तो वह वाहेगुरु के नाम का सिमरन करने से ही पवित्र हो सकती है।

ਪੁੰਨੀ ਪਾਪੀ ਆਖਣੁ ਨਾਹਿ ॥

पुंनी पापी आखणु नाहि ॥

पुण्य और पाप मात्र कहने को ही नहीं हैं।

ਕਰਿ ਕਰਿ ਕਰਣਾ ਲਿਖਿ ਲੈ ਜਾਹੁ ॥

करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥

अपितु इस संसार में रहकर मानव जीव द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक अच्छे व बुरे कर्मों का विवरण धर्मराज द्वारा भेजे गए चित्र-गुप्त द्वारा लिखा जाएगा, जिसके फलानुसार उसे स्वर्ग अथवा नरक की प्राप्ति होगी।

ਆਪੇ ਬੀਜਿ ਆਪੇ ਹੀ ਖਾਹੁ ॥

आपे बीजि आपे ही खाहु ॥

अतः मनुष्य स्वयं ही कर्म बीज बीजता है और स्वयं ही उसका फल प्राप्त करता है।

ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੀ ਆਵਹੁ ਜਾਹੁ ॥੨੦॥

नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥

गुरु नानक जी का कथन है कि इस संसार में जीव के कर्म उसे आवागमन के चक्र में ही रखेंगे,

निरंकार जीव के कर्मों के अनुसार ही उसके फल की आज्ञा करेगा ॥ २० ॥

ਤੀਰਥੁ ਤਪੁ ਦਇਆ ਦਤੁ ਦਾਨੁ ॥

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥

तीर्थ-यात्रा, तप-साधना, जीवों पर दया-भाव करके तथा निःस्वार्थ दान देने से

ਜੇ ਕੋ ਪਾਵੈ ਤਿਲ ਕਾ ਮਾਨੁ ॥

जे को पावै तिल का मानु ॥

यदि कोई मनुष्य सम्मान प्राप्त करता है तो वह अति लघु होता है।

ਸੁਣਿਆ ਮੰਨਿਆ ਮਨਿ ਕੀਤਾ ਭਾਉ ॥

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥

किन्तु जिन्होंने परमेश्वर के नाम को मन में प्रीत करके सुना व उसका निरन्तर चिन्तन किया है।

ਅੰਤਰਗਤਿ ਤੀਰਥਿ ਮਲਿ ਨਾਉ ॥

अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥

उस जीव ने अपने हृदय में बसे हुए निरंकार में लीन होकर अपनी अन्तरात्मा की मैल को शुद्ध कर लिया है।

ਸਭਿ ਗੁਣ ਤੇਰੇ ਮੈ ਨਾਹੀ ਕੋਇ ॥

सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥

हे सर्गुण स्वरूप परमात्मा! जो कुछ भी शुभ और सद्‌गुणमय मुझमें है, वह आपकी ही कृपा का परिणाम है; मेरा तो कुछ भी नहीं।

ਵਿਣੁ ਗੁਣ ਕੀਤੇ ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਇ ॥

विणु गुण कीते भगति न होइ ॥

सदाचार के गुणों को धारण किए बिना परमेश्वर की भक्ति भी नहीं हो सकती।

ਸੁਅਸਤਿ ਆਥਿ ਬਾਣੀ ਬਰਮਾਉ ॥

सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥

हे परमात्मा! आप ही इस जगत की माया हैं, आप ही अनहद शब्द के रूप में गूंज रहे हैं, और आप ही सृजनकर्ता ब्रह्मा हैं; मैं आपको कोटिशः प्रणाम करता हूँ।

ਸਤਿ ਸੁਹਾਣੁ ਸਦਾ ਮਨਿ ਚਾਉ ॥
सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥
आप सत्य हो, चैतन्य हो और सदैव आनन्द स्वरूप हो।

ਕਵਣੁ ਸੁ ਵੇਲਾ ਵਖਤੁ ਕਵਣੁ ਕਵਣ ਥਿਤਿ ਕਵਣੁ ਵਾਰੁ ॥
कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥
परमात्मा ने यह सृष्टि जब पैदा की थी तब कौन-सा समय, कौन-सा पल, कौन-सी तिथि, तथा कौन-सा दिन था।

ਕਵਣਿ ਸਿ ਰੁਤੀ ਮਾਹੁ ਕਵਣੁ ਜਿਤੁ ਹੋਆ ਆਕਾਰੁ ॥
कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥
तब कौन-सी ऋतु, कौन-सा माह था, जब यह प्रसार हुआ था, यह सब कौन जानता है ?

ਵੇਲ ਨ ਪਾਈਆ ਪੰਡਤੀ ਜਿ ਹੋਵੈ ਲੇਖੁ ਪੁਰਾਣੁ ॥
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥
सृष्टि के प्रसार का निश्चित समय महा विद्वान, ऋषि-मुनि आदि भी नहीं जान पाए, यदि वे जान पाते तो निश्चय ही उन्होंने वेदों अथवा धर्म-ग्रन्थों में इसका उल्लेख किया होता।

ਵਖਤੁ ਨ ਪਾਇਓ ਕਾਦੀਆ ਜਿ ਲਿਖਨਿ ਲੇਖੁ ਕੁਰਾਣੁ ॥
वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥
इस समय का ज्ञान तो काजियों को भी नहीं हो पाया, यदि उन्हें पता होता तो वे कुरान आदि में इसका उल्लेख अवश्य करते।

ਥਿਤਿ ਵਾਰੁ ਨਾ ਜੋਗੀ ਜਾਣੈ ਰੁਤਿ ਮਾਹੁ ਨਾ ਕੋਈ ॥
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥
इस सृष्टि की रचना का दिन, वार, ऋतु व महीना आदि कोई योगी भी नहीं जान पाया है।

ਜਾ ਕਰਤਾ ਸਿਰਠੀ ਕਉ ਸਾਜੇ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਸੋਈ ॥
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥
इसके बारे में तो जो इस जगत् का रचयिता है वह स्वयं ही जान सकता है कि इस सृष्टि का प्रसार कब किया गया।

ਕਿਵ ਕਰਿ ਆਖਾ ਕਿਵ ਸਾਲਾਹੀ ਕਿਉ ਵਰਨੀ ਕਿਵ ਜਾਣਾ ॥
किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥
मैं किस प्रकार उस अकाल पुरुष के चमत्कार को कहूँ, कैसे उसकी प्रशंसा करूँ, किस प्रकार

वर्णन करूँ और कैसे उसके भेद को जान सकता हूँ ?

ਨਾਨਕ ਆਖਣਿ ਸਭੁ ਕੋ ਆਖੈ ਇਕ ਦੂ ਇਕੁ ਸਿਆਣਾ ॥

नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥

हे नानक, हर कोई ईश्वर के गुणों का वर्णन करने को तत्पर है,परंतु अपने विवेक को श्रेष्ठ मानकर, वह दूसरों की बुद्धि को तुच्छ समझता है।

ਵਡਾ ਸਾਹਿਬੁ ਵਡੀ ਨਾਈ ਕੀਤਾ ਜਾ ਕਾ ਹੋਵੈ ॥

वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥

ईश्वर ही परम स्वामी है, उसकी महिमा अपार और अगम है; सृष्टि में जो भी हो रहा है वह सब उनकी इच्छा के अनुसार होता है।

ਨਾਨਕ ਜੇ ਕੋ ਆਪੌ ਜਾਣੈ ਅਗੈ ਗਇਆ ਨ ਸੋਹੈ ॥੨੧॥

नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥

हे नानक ! यदि कोई जीव उस अभेद निरंकार के गुणात्मक रहस्य को जानने का अभिमान करता है तो उसे इस लोक में तो क्या परलोक में भी सम्मान नहीं मिलता ॥ २१ ॥

ਪਾਤਾਲਾ ਪਾਤਾਲ ਲਖ ਆਗਾਸਾ ਆਗਾਸ ॥

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥

इस सृष्टि में पातालों के नीचे और भी अनगिनत पाताल हैं, और ऊपर सहस्रों स्वर्गीय लोक व्याप्त हैं।

ਓੜਕ ਓੜਕ ਭਾਲਿ ਥਕੇ ਵੇਦ ਕਹਨਿ ਇਕ ਵਾਤ ॥

ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥

वेद-ग्रंथों में भी यही एक बात कही गई है कि ढूंढने वाले इसको अंतिम छोर तक ढूंढ कर थक गए हैं किंतु इसका अंत किसी ने नहीं पाया है।

ਸਹਸ ਅਠਾਰਹ ਕਹਨਿ ਕਤੇਬਾ ਅਸੁਲੂ ਇਕੁ ਧਾਤੁ ॥

सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥

सभी धर्म ग्रन्थों में अठ्ठारह हजार जगत् होने की बात कही गई है परंतु वास्तव में इनका मूल एक ही परमेश्वर है जो कि इनका स्रष्टा है।

ਲੇਖਾ ਹੋਇ ਤ ਲਿਖੀਐ ਲੇਖੈ ਹੋਇ ਵਿਣਾਸੁ ॥

लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥

उनकी रचना के आकार का अनुमान या गणना नहीं की जा सकती है, और यह किसी भी

मानवीय गणना से परे है।

ਨਾਨਕ ਵਡਾ ਆਖੀਐ ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਆਪੁ ॥੨੨॥

नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥

हे नानक ! जिस सृजनहार को इस सम्पूर्ण जगत् में महान कहा जा रहा है वह स्वयं को स्वयं ही जानता है अथवा जान सकता है ॥ २२॥

ਸਾਲਾਹੀ ਸਾਲਾਹਿ ਏਤੀ ਸੁਰਤਿ ਨ ਪਾਈਆ ॥

सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥

स्तुति करने वाले साधकों ने भी उस परमात्मा की स्तुति करके उसकी सीमा को नहीं पाया।

ਨਦੀਆ ਅਤੈ ਵਾਹ ਪਵਹਿ ਸਮੁੰਦਿ ਨ ਜਾਣੀਅਹਿ ॥

नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥

जैसे नदियां-नाले समुद्र में मिलकर उसका अथाह अंत नहीं पा सकते, बल्कि अपना अस्तित्व भी खो देते हैं, वैसे ही स्तुति करने वाले स्तुति करते-करते उसमें ही लीन हो जाते हैं।

ਸਮੁੰਦ ਸਾਹ ਸੁਲਤਾਨ ਗਿਰਹਾ ਸੇਤੀ ਮਾਲੁ ਧਨੁ ॥

मुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥

समुद्रों के राजा और सम्राट, पर्वत समान अतुल्य धन-सम्पत्ति के स्वामी होकर भी,

ਕੀੜੀ ਤੁਲਿ ਨ ਹੋਵਨੀ ਜੇ ਤਿਸੁ ਮਨਹੁ ਨ ਵੀਸਰਹਿ ॥੨੩॥

कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥

उस चींटी के भी समान नहीं हो सकते, यदि उनके मन से परमेश्वर विस्मृत नहीं हुआ होता ॥ २३॥

ਅੰਤੁ ਨ ਸਿਫਤੀ ਕਹਣਿ ਨ ਅੰਤੁ ॥

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥

उस निरंकार की स्तुति करने की कोई सीमा नहीं तथा कहने से भी उसकी प्रशंसा का अन्त नहीं हो सकता ।

ਅੰਤੁ ਨ ਕਰਣੈ ਦੇਣਿ ਨ ਅੰਤੁ ॥

अंतु न करणै देणि न अंतु ॥

सृजनहार द्वारा रची गई सृष्टि का भी कोई अन्त नहीं परंतु जब वह देता है तब भी उसका कोई अन्त नहीं है ।

ਅੰਤੁ ਨ ਵੇਖਣਿ ਸੁਣਣਿ ਨ ਅੰਤੁ ॥
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥
उसके देखने व सुनने का भी अन्त नहीं है, अर्थात्-वह निरंकार सर्वद्रष्टा व सर्वश्रोता है ।

ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਪੈ ਕਿਆ ਮਨਿ ਮੰਤੁ ॥
अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥
ईश्वर के हृदय का रहस्य क्या है, उसका बोध भी नहीं हो सकता ।

ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਪੈ ਕੀਤਾ ਆਕਾਰੁ ॥
अंतु न जापै कीता आकारु ॥
इस सृष्टि का प्रसार जो उसने किया उसकी अवधि अथवा सीमा को भी नहीं जाना जा सकता ।

ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਪੈ ਪਾਰਾਵਾਰੁ ॥
अंतु न जापै पारावारु ॥
उसके आदि व अन्त को भी नहीं जाना जा सकता ।

ਅੰਤ ਕਾਰਣਿ ਕੇਤੇ ਬਿਲਲਾਹਿ ॥
अंत कारणि केते बिललाहि ॥
अनेकानेक जीव उसका अन्त पाने के लिए प्रयासरत रहते हैं ।

ਤਾ ਕੇ ਅੰਤ ਨ ਪਾਏ ਜਾਹਿ ॥
ता के अंत न पाए जाहि ॥
किन्तु उस अथाह, अनन्त अकाल पुरुष का अंत नहीं पाया जा सकता ।

ਏਹੁ ਅੰਤੁ ਨ ਜਾਣੈ ਕੋਇ ॥
एहु अंतु न जाणै कोइ ॥
उसके गुणों का अन्त कहाँ होता है यह कोई नहीं जान सकता ।

ਬਹੁਤਾ ਕਹੀਐ ਬਹੁਤਾ ਹੋਇ ॥
बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥
उस पारब्रह्म की प्रशंसा, स्तुति, आकार अथवा गुणों को जितना कहा जाता है वह उतने ही अधिक होते जाते हैं

ਵਡਾ ਸਾਹਿਬੁ ਊਚਾ ਥਾਉ ॥

वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥

निरंकार सर्वश्रेष्ठ है, उसका स्थान सर्वोच्च है ।

ਊਚੇ ਉਪਰਿ ਊਚਾ ਨਾਉ ॥

ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥

किन्तु उस सर्वश्रेष्ठ निरंकार का नाम महानतम् है ।

ਏਵਡੁ ਊਚਾ ਹੋਵੈ ਕੋਇ ॥

एवडु ऊचा होवै कोइ ॥

यदि कोई शक्ति उससे बड़ी अथवा ऊँची है,

ਤਿਸੁ ਊਚੇ ਕਉ ਜਾਣੈ ਸੋਇ ॥

तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥

तो वह ही उसकी सर्वोच्च और अतुलनीय स्थिति को समझ सकता है।

ਜੇਵਡੁ ਆਪਿ ਜਾਣੈ ਆਪਿ ਆਪਿ ॥

जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥

निरंकार अपना सर्वस्व स्वयं ही जानता है अथवा जान सकता है, अन्य कोई नहीं

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਕਰਮੀ ਦਾਤਿ ॥੨੪॥

नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥

सतगुरु नानक देव जी का कथन है कि वह कृपासागर जीवों पर करुणा करके उनके कर्मों के अनुसार उन्हें समस्त पदार्थ प्रदान करते हैं॥ २४॥

ਬਹੁਤਾ ਕਰਮੁ ਲਿਖਿਆ ਨਾ ਜਾਇ ॥

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥

उस प्रभु के उपकार इतने अधिक हैं कि उनको लिखने की समर्थता किसी में भी नहीं ।

ਵਡਾ ਦਾਤਾ ਤਿਲੁ ਨ ਤਮਾਇ ॥

वडा दाता तिलु न तमाइ ॥

वह अनेक अनगिनत वरदान देने वाले होने के कारण महान है किंतु उनमें लोभ लेश मात्र भी नहीं है ।

ਕੇਤੇ ਮੰਗਹਿ ਜੋਧ ਅਪਾਰ ॥

केते मंगहि जोध अपार ॥

अनेक महान योद्धा भी अनंत परमात्मा के समक्ष दीन भाव से उनकी कृपा-दृष्टि की चाह रखते हैं।

ਕੇਤਿਆ ਗਣਤ ਨਹੀ ਵੀਚਾਰੁ ॥

केतिआ गणत नही वीचारु ॥

और भी अनगिनत जन, जिनकी गिनती नहीं की जा सकती, प्रभु की दया के लिए भीख मांग रहे हैं।

ਕੇਤੇ ਖਪਿ ਤੁਟਹਿ ਵੇਕਾਰ ॥

केते खपि तुटहि वेकार ॥

बहुत से मनुष्य सांसारिक विकारों में उलझ कर, दुःख और चिंता में डूब जाते हैं।

ਕੇਤੇ ਲੈ ਲੈ ਮੁਕਰੁ ਪਾਹਿ ॥

केते लै लै मुकरु पाहि ॥

कई अकाल पुरख द्वारा दिए जाने वाले पदार्थों को लेकर अस्वीकृत कर जाते हैं ।

ਕੇਤੇ ਮੂਰਖ ਖਾਹੀ ਖਾਹਿ ॥

केते मूरख खाही खाहि ॥

कई मूढ़ व्यक्ति परमात्मा से पदार्थ ले लेकर खाते रहते हैं, कभी उसे स्मरण नहीं करते ।

ਕੇਤਿਆ ਦੂਖ ਭੂਖ ਸਦ ਮਾਰ ॥

केतिआ दूख भूख सद मार ॥

कईयों को दुःख व भूख की मार सदैव पड़ती रहती है, क्योंकि यह उनके कर्मों में ही लिखा होता है ।

ਏਹਿ ਭਿ ਦਾਤਿ ਤੇਰੀ ਦਾਤਾਰ ॥

एहि भि दाति तेरी दातार ॥

किन्तु सज्जन पुरुष ऐसी मार को उस परमात्मा का आर्शीवाद ही मानते हैं ।

ਬੰਦਿ ਖਲਾਸੀ ਭਾਣੈ ਹੋਇ ॥

बंदि खलासी भाणै होइ ॥

इन्हीं कष्टों के कारण ही मानव जीव को वाहेगुरु का स्मरण होता है ।

ਹੋਰੁ ਆਖਿ ਨ ਸਕੈ ਕੋਇ ॥
होरु आखि न सकै कोइ ॥
मनुष्य को माया-मोह के बंधन से छुटकारा भी ईश्वर की आज्ञा में रहने से ही मिलता है।

ਜੇ ਕੋ ਖਾਇਕੁ ਆਖਣਿ ਪਾਇ ॥
जे को खाइकु आखणि पाइ ॥
ईश्वर की आज्ञा में रहने के अतिरिक्त माया के मोह-बंधन से छुटकारा पाने की कोई अन्य विधि कोई नहीं बता सकता ।

ਓਹੁ ਜਾਣੈ ਜੇਤੀਆ ਮੁਹਿ ਖਾਇ ॥
ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥
यदि अज्ञानता वश कोई व्यक्ति इसके बारे में कथन करने की चेष्टा करे तो फिर उसे ही मालूम पड़ेगा कि उसे अपने मुँह पर यमों आदि की कितनी चोटें खानी पड़ी हैं ।

ਆਪੇ ਜਾਣੈ ਆਪੇ ਦੇਇ ॥
आपे जाणै आपे देइ ॥
परमात्मा संसार के समस्त प्राणियों की ज़रूरतों को जानता है और उन्हें स्वयं ही प्रदान भी करता है ।

ਆਖਹਿ ਸਿ ਭਿ ਕੇਈ ਕੇਇ ॥
आखहि सि भि केई केइ ॥
संसार में सभी जीव अकृतज्ञ ही नहीं हैं, कई व्यक्ति ऐसे भी हैं जो इस बात को मानते हैं

ਜਿਸ ਨੋ ਬਖਸੇ ਸਿਫਤਿ ਸਾਲਾਹ ॥
जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥
परमात्मा प्रसन्न होकर जिस व्यक्ति को अपनी स्तुति को गाने की शक्ति प्रदान करता है

ਨਾਨਕ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ॥੨੫॥
नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥
हे नानक ! वह बादशाहों का भी बादशाह हो जाता है ; अर्थात् उसे ऊँचा व उत्तम पद प्राप्त हो जाता है ॥ २५ ॥

ਅਮੁਲ ਗੁਣ ਅਮੁਲ ਵਾਪਾਰ ॥
अमुल गुण अमुल वापार ॥
निरंकार के जिन गुणों को कथन नहीं किया जा सकता वे अमूल्य हैं, और इस निरंकार का

सिमरन अमूल्य व्यापार है ।

ਅਮੁਲ ਵਾਪਾਰੀਏ ਅਮੁਲ ਭੰਡਾਰ ॥

अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥

यह सिमरन रूपी व्यापार का मार्गदर्शन करने वाले संत भी अमूल्य व्यापारी हैं और उन संतों के पास जो सद्‌गुणों का भण्डार है वह भी अमूल्य है ।

ਅਮੁਲ ਆਵਹਿ ਅਮੁਲ ਲੈ ਜਾਹਿ ॥

अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥

जो व्यक्ति इन संतों के पास प्रभु-मिलाप हेतु आते हैं वे भी अमूल्य हैं और इनसे जो गुण ले जाते हैं वे भी अमूल्य हैं ।

ਅਮੁਲ ਭਾਇ ਅਮੁਲਾ ਸਮਾਹਿ ॥

अमुल भाइ अमुला समाहि ॥

परस्पर गुरु-सिक्ख का प्रेम अमूल्य है, गुरु के प्रेम से आत्मा को प्राप्त होने वाला आनंद भी अमूल्य है ।

ਅਮੁਲੁ ਧਰਮੁ ਅਮੁਲੁ ਦੀਬਾਣੁ ॥

अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥

अकाल-पुरुष का न्याय भी अमूल्य है, उसका न्यायालय भी अमूल्य है ।

ਅਮੁਲੁ ਤੁਲੁ ਅਮੁਲੁ ਪਰਵਾਣੁ ॥

अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥

अकाल पुरख की न्याय करने वाली न्याय व्यवस्था अमूल्य एवं अतुलनीय है, और जीवों के अच्छे-बुरे कर्मों को तोलने हेतु न्याय के सिद्धांत भी अमूल्य है ।

ਅਮੁਲੁ ਬਖਸੀਸ ਅਮੁਲੁ ਨੀਸਾਣੁ ॥

अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥

अकाल पुरख द्वारा प्रदान किए जाने वाले पदार्थ भी अमूल्य हैं और उन पदार्थों का चिन्ह भी अमूल्य है ।

ਅਮੁਲੁ ਕਰਮੁ ਅਮੁਲੁ ਫੁਰਮਾਣੁ ॥

अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥

निरंकार की जीव पर होने वाली कृपा भी अमूल्य है तथा उसका आदेश भी अमूल्य है ।

ਅਮੁਲੋ ਅਮੁਲੁ ਆਖਿਆ ਨ ਜਾਇ ॥
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥
वह परमात्मा अति अमूल्य है उसका कथन घनिष्ठता से कर पाना असम्भव है ।

ਆਖਿ ਆਖਿ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥
आखि आखि रहे लिव लाइ ॥
परंतु फिर भी अनेक भक्त जन उसके गुणों का वर्णन करते हुए भूत, भविष्य व वर्तमान काल में उसमें लीन हो रहे हैं ।

ਆਖਹਿ ਵੇਦ ਪਾਠ ਪੁਰਾਣ ॥
आखहि वेद पाठ पुराण ॥
चारों वेद व अट्ठारह पुराणों में भी उसकी महिमा कही गई है ।

ਆਖਹਿ ਪੜੇ ਕਰਹਿ ਵਖਿਆਣ ॥
आखहि पड़े करहि वखिआण ॥
उनको पढ़ने वाले भी अकाल-पुरख का व्याख्यान करते हैं ।

ਆਖਹਿ ਬਰਮੇ ਆਖਹਿ ਇੰਦ ॥
आखहि बरमे आखहि इंद ॥
सृष्टिकर्ता ब्रह्मा व स्वर्गाधिपति इन्द्र भी उसके अमूल्य गुणों को कथन करते हैं ।

ਆਖਹਿ ਗੋਪੀ ਤੈ ਗੋਵਿੰਦ ॥
आखहि गोपी तै गोविंद ॥
गिरिधर गोपाल कृष्ण तथा उसकी गोपियाँ भी उस निरंकार का गुणगान करती हैं ।

ਆਖਹਿ ਈਸਰ ਆਖਹਿ ਸਿਧ ॥
आखहि ईसर आखहि सिध ॥
महादेव तथा गोरख आदि सिद्ध भी उसकी कीर्ति को कहते हैं ।

ਆਖਹਿ ਕੇਤੇ ਕੀਤੇ ਬੁਧ ॥
आखहि केते कीते बुध ॥
उस सृष्टिकर्ता ने इस जगत् में जितने भी बुद्धिमान जीव उत्पन्न किए हैं वे भी उसके यश को कहते हैं।

ਆਖਹਿ ਦਾਨਵ ਆਖਹਿ ਦੇਵ ॥

आखहि दानव आखहि देव ॥

समस्त दैत्य व देवतादि भी उसकी महिमा को कहते हैं ।

ਆਖਹਿ ਸੁਰਿ ਨਰ ਮੁਨਿ ਜਨ ਸੇਵ ॥

आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥

संसार के सभी पुण्य-कर्मी मानव, नारद आदि ऋषि-मुनि तथा अन्य भक्त जन उसकी प्रशंसा के गीत गाते हैं ।

ਕੇਤੇ ਆਖਹਿ ਆਖਣਿ ਪਾਹਿ ॥

केते आखहि आखणि पाहि ॥

कितने ही जीव वर्तमान में कह रहे हैं, तथा कितने ही भविष्य में कहने का यत्न करेंगे

ਕੇਤੇ ਕਹਿ ਕਹਿ ਉਠਿ ਉਠਿ ਜਾਹਿ ॥

केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥

कितने ही जीव भूतकाल में कहते हुए अपना जीवन समाप्त कर चुके हैं ।

ਏਤੇ ਕੀਤੇ ਹੋਰਿ ਕਰੇਹਿ ॥

एते कीते होरि करेहि ॥

इतने तो हम गिन चुके हैं यदि इतने ही और भी साथ मिला लिए जाएँ ।

ਤਾ ਆਖਿ ਨ ਸਕਹਿ ਕੇਈ ਕੇਇ ॥

ता आखि न सकहि केई केइ ॥

तो भी कोई किसी साधन से उसकी अमूल्य स्तुति कह नहीं सकता ।

ਜੇਵਡੁ ਭਾਵੈ ਤੇਵਡੁ ਹੋਇ ॥

जेवडु भावै तेवडु होइ ॥

ईश्वर जितना स्व-विस्तार चाहते हैं उतने ही विस्तृत हो जाते हैं ।

ਨਾਨਕ ਜਾਣੈ ਸਾਚਾ ਸੋਇ ॥

नानक जाणै साचा सोइ ॥

श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि, वह सत्य स्वरूप निरंकार ही अपने अमूल्य गुणों को जानता है।

ਜੇ ਕੋ ਆਖੈ ਬੋਲੁਵਿਗਾੜੁ ॥

जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥

यदि कोई निरर्थक बोलने वाला परमेश्वर का अंत कहे कि वह इतना है

ਤਾ ਲਿਖੀਐ ਸਿਰਿ ਗਾਵਾਰਾ ਗਾਵਾਰੁ ॥੨੬॥

ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥

तो उसे महामूर्खों में अंकित किया जाता है॥ २६ ॥

ਸੋ ਦਰੁ ਕੇਹਾ ਸੋ ਘਰੁ ਕੇਹਾ ਜਿਤੁ ਬਹਿ ਸਰਬ ਸਮਾਲੇ ॥

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥

उस प्रतिपालक ईश्वर का द्वार तथा घर कैसा है, जहाँ बैठकर वह सम्पूर्ण सृष्टि को सम्भाल रहा है ?

ਵਾਜੇ ਨਾਦ ਅਨੇਕ ਅਸੰਖਾ ਕੇਤੇ ਵਾਵਣਹਾਰੇ ॥

वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥

(यहाँ पर सतगुरु जी इस प्रश्न की निवृति में उत्तर देते हैं) हे मानव! ईश्वर की इस अद्वितीय रचना में अनगिनत संगीतज्ञ विविध वाद्ययंत्रों से अनंत रागों का सृजन करते हैं।

ਕੇਤੇ ਰਾਗ ਪਰੀ ਸਿਉ ਕਹੀਅਨਿ ਕੇਤੇ ਗਾਵਣਹਾਰੇ ॥

केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥

कितने ही राग हैं जो रागिनियों के संग वहाँ गान किए जा रहे हैं और उन रागों को गाने वाले गंधर्व आदि रागी भी कितने ही हैं ।(अनगिनत गायक अपने सहगायकों के साथ मिलकर ईश्वरीय संगीत की रचनाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं।)

ਗਾਵਹਿ ਤੁਹਨੋ ਪਉਣੁ ਪਾਣੀ ਬੈਸੰਤਰੁ ਗਾਵੈ ਰਾਜਾ ਧਰਮੁ ਦੁਆਰੇ ॥

गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥

उस निरंकार का यश पवन, जल तथा अग्नि देव गा रहे हैं तथा समस्त जीवों के कर्मों का विश्लेषक धर्मराज भी उसके द्वार पर खड़ा उसकी महिमा को गाता है ।

ਗਾਵਹਿ ਚਿਤੁ ਗੁਪਤੁ ਲਿਖਿ ਜਾਣਹਿ ਲਿਖਿ ਲਿਖਿ ਧਰਮੁ ਵੀਚਾਰੇ ॥

गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥

जीवों द्वारा किए जाने वाले कर्मों को लिखने वाले चित्र-गुप्त भी उस अकाल-पुरख का यशोगान करते हैं तथा धर्मराज चित्रगुप्त द्वारा लिखे जाने वाले शुभाशुभ कर्मों का विचार करता है ।

ਗਾਵਹਿ ਈਸਰੁ ਬਰਮਾ ਦੇਵੀ ਸੋਹਨਿ ਸਦਾ ਸਵਾਰੇ ॥

गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥

परमात्मा द्वारा प्रतिपादित शिव, ब्रह्मा व उनकी देवियों (शक्ति) जो शोभायमान हैं, सदैव उसका स्तुति-गान करते हैं ।

ਗਾਵਹਿ ਇੰਦ ਇਦਾਸਣਿ ਬੈਠੇ ਦੇਵਤਿਆ ਦਰਿ ਨਾਲੇ ॥

गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥

हे निरंकार ! समस्त देवताओं व स्वर्ग का अधिपति इन्द्र अपने सिंहासन पर बैठा अन्य देवताओं के साथ मिलकर आपके द्वार पर खड़ा आपका यश गा रहे हैं ।

ਗਾਵਹਿ ਸਿਧ ਸਮਾਧੀ ਅੰਦਰਿ ਗਾਵਨਿ ਸਾਧ ਵਿਚਾਰੇ ॥

गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥

सिद्ध पुरुष ध्यान की गहराई में आपकी महिमा का गान करते हैं, संतगण चिंतन में डूबकर आपके गुणों का गान करते हैं।

ਗਾਵਨਿ ਜਤੀ ਸਤੀ ਸੰਤੋਖੀ ਗਾਵਹਿ ਵੀਰ ਕਰਾਰੇ ॥

गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥

आपकी स्तुतिगान यति, सती और संतोषी व्यक्ति भी गाते हैं तथा पराक्रमी योद्धा भी आपकी महिमा का गान करते हैं ।

ਗਾਵਨਿ ਪੰਡਿਤ ਪੜਨਿ ਰਖੀਸਰ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਵੇਦਾ ਨਾਲੇ ॥

गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥

संसार के समस्त विद्वान व महान् जितेन्द्रिय ऋषि-मुनि युगों-युगों से वेदों को पढ़-पढ़ कर उस अकाल पुरख का यशोगान कर रहे हैं ।

ਗਾਵਹਿ ਮੋਹਣੀਆ ਮਨੁ ਮੋਹਨਿ ਸੁਰਗਾ ਮਛ ਪਇਆਲੇ ॥

गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥

मन को मोह लेने वाली समस्त सुन्दर स्त्रियां स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक व पाताल लोक में आपका गुणगान कर रही हैं ।

ਗਾਵਨਿ ਰਤਨ ਉਪਾਏ ਤੇਰੇ ਅਠਸਠਿ ਤੀਰਥ ਨਾਲੇ ॥

गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥

निरंकार द्वारा उत्पन्न किए हुए चौदह रत्न, संसार के अठसठ तीर्थ तथा उन में विद्यमान संत जन (श्रेष्ठ जन) भी उसके यश को गाते हैं ।

ਗਾਵਹਿ ਜੋਧ ਮਹਾਬਲ ਸੂਰਾ ਗਾਵਹਿ ਖਾਣੀ ਚਾਰੇ ॥
गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥
सभी योद्धा, महाबली, शूरवीर अकाल पुरख का यश गाते हैं, उत्पत्ति के चारों स्रोत (अण्डज, जरायुज, स्वेदज व उदभिज्ज) भी उसके गुणों को गाते हैं ।

ਗਾਵਹਿ ਖੰਡ ਮੰਡਲ ਵਰਭੰਡਾ ਕਰਿ ਕਰਿ ਰਖੇ ਧਾਰੇ ॥
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥
नवखण्ड, मण्डल व सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, जो उस सृजनहार ने बना-बना कर धारण कर रखे हैं, वे सभी आपकी स्तुति गाते हैं ।

ਸੇਈ ਤੁਧੁਨੋ ਗਾਵਹਿ ਜੋ ਤੁਧੁ ਭਾਵਨਿ ਰਤੇ ਤੇਰੇ ਭਗਤ ਰਸਾਲੇ ॥
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥
वास्तव में केवल वे ही आपकी कीर्ति को गा सकते हैं जो आपकी भक्ति में लीन हैं, आपका े नाम के रसिया हैं, और जो आपको अच्छे लगते हैं ।

ਹੋਰਿ ਕੇਤੇ ਗਾਵਨਿ ਸੇ ਮੈ ਚਿਤਿ ਨ ਆਵਨਿ ਨਾਨਕੁ ਕਿਆ ਵੀਚਾਰੇ ॥
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥
अनेकानेक और भी कई ऐसे जीव मुझे स्मरण नहीं हो रहे हैं, जो आपका यशोगान करते हैं, हे नानक ! मैं कहाँ तक उन जीवों की गणना अर्थात् विचार करूँ ।

ਸੋਈ ਸੋਈ ਸਦਾ ਸਚੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚਾ ਸਾਚੀ ਨਾਈ ॥
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥
वह सत्यस्वरूप अकाल पुरख भूतकाल में थे, वही सद्गुणी निरंकार वर्तमान में भी है

ਹੈ ਭੀ ਹੋਸੀ ਜਾਇ ਨ ਜਾਸੀ ਰਚਨਾ ਜਿਨਿ ਰਚਾਈ ॥
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥
वह भविष्य में सदैव रहेगा, वह सृजनहार परमात्मा न जन्म लेता है और न ही उसका नाश होता है।

ਰੰਗੀ ਰੰਗੀ ਭਾਤੀ ਕਰਿ ਕਰਿ ਜਿਨਸੀ ਮਾਇਆ ਜਿਨਿ ਉਪਾਈ ॥
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥
जिस सृष्टि रचयिता ईश्वर ने रंग-बिरंगी, तरह-तरह के आकार वाली व अनेकानेक जीवों की उत्पत्ति अपनी माया द्वारा की है ।

ਕਰਿ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਕੀਤਾ ਆਪਣਾ ਜਿਵ ਤਿਸ ਦੀ ਵਡਿਆਈ ॥
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥
अपनी इस उत्पत्ति को कर-करके वह अपनी रुचि अनुसार ही देखता है अर्थात् उनकी देखभाल अपनी इच्छानुसार ही करता है ।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੋਈ ਕਰਸੀ ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਰਣਾ ਜਾਈ ॥
जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥
जो भी उस अकाल पुरख को भला लगता है वही कार्य वह करता है और भविष्य में करेगा, इसके प्रति उसको आदेश करने वाला उसके समान कोई नहीं है ।

ਸੋ ਪਾਤਿਸਾਹੁ ਸਾਹਾ ਪਾਤਿਸਾਹਿਬੁ ਨਾਨਕ ਰਹਣੁ ਰਜਾਈ ॥੨੭॥
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥
गुरु नानक जी का कथन है कि हे मानव ! वह ईश्वर शाहों का शाह अर्थात शहंशाह है, उसकी आज्ञा में रहना ही उचित है॥ २७ ॥

ਮੁੰਦਾ ਸੰਤੋਖੁ ਸਰਮੁ ਪਤੁ ਝੋਲੀ ਧਿਆਨ ਕੀ ਕਰਹਿ ਬਿਭੂਤਿ ॥
मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥
गुरु जी कहते हैं कि हे मानव योगी ! तुम संतोष रूपी मुद्राएँ, दुष्कर्मों से लाज रूपी पात्र, पाप रहित होकर लोक-परलोक में बनाई जाने वाली प्रतिष्ठा रूपी चोली ग्रहण कर तथा शरीर को प्रभु की नाम-सिमरन रूपी विभूति लगाकर रख ।

ਖਿੰਥਾ ਕਾਲੁ ਕੁਆਰੀ ਕਾਇਆ ਜੁਗਤਿ ਡੰਡਾ ਪਰਤੀਤਿ ॥
खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥
मृत्यु का स्मरण करना तेरी गोद है, शरीर का पवित्र रहना योग की युक्ति है, अकाल पुरख पर दृढ़ विश्वास तुम्हारा डण्डा है । इन सब सदाचारों को ग्रहण करना ही वास्तविक योगी भेष है ।

ਆਈ ਪੰਥੀ ਸਗਲ ਜਮਾਤੀ ਮਨਿ ਜੀਤੈ ਜਗੁ ਜੀਤੁ ॥
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥
संसार के समस्त जीवों में तुम्हारा प्रेम हो अर्थात् उनके दुःख-सुख को तुम अपना दुःख-सुख अनुभव करो, यही तुम्हारा श्रेष्ठ पंथ (योगियों का श्रेष्ठ पंथ) है । काम आदि विकारों से मन को जीत लेना जगत् पर विजय प्राप्त कर लेने के समान है ।

ਆਦੇਸੁ ਤਿਸੈ ਆਦੇਸੁ ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
ईश्वर को विनम्रता पूर्वक प्रणाम करें।

ਆਦਿ ਅਨੀਲੁ ਅਨਾਦਿ ਅਨਾਹਤਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਏਕੋ ਵੇਸੁ ॥੨੮॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥
जो सभी का मूल, रंग रहित, पवित्र स्वरूप, आदि रहित, अनश्वर व अपरिवर्तनीय स्वरूप है।॥२८॥

ਭੁਗਤਿ ਗਿਆਨੁ ਦਇਆ ਭੰਡਾਰਣਿ ਘਟਿ ਘਟਿ ਵਾਜਹਿ ਨਾਦ ॥
भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥
हे योगी, उस ब्रह्मज्ञान को अपना आहार बनाओ, दया को अपनी निःस्वार्थ सेविका बनाकर अपनाओ,और हृदय की हर एक धड़कन को पवित्र सींग स्वर का रूप दे दो।

ਆਪਿ ਨਾਥੁ ਨਾਥੀ ਸਭ ਜਾ ਕੀ ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਅਵਰਾ ਸਾਦ ॥
आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥
ईश्वर ही सर्वशक्तिमय स्वामी है, जो पूरे ब्रह्माण्ड का पालन-पोषण करता है; परन्तु चमत्कार और अन्य आध्यात्मिक विभ्रम व्यक्ति को ईश्वर से दूर कर देते हैं।

ਸੰਜੋਗੁ ਵਿਜੋਗੁ ਦੁਇ ਕਾਰ ਚਲਾਵਹਿ ਲੇਖੇ ਆਵਹਿ ਭਾਗ ॥
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥
संयोग व वियोग रूपी नियम दोनों मिलकर इस सृष्टि का कार्य चला रहे हैं, कर्मानुसार ही जीवों को अपने-अपने भाग्य की प्राप्ति होती है।

ਆਦੇਸੁ ਤਿਸੈ ਆਦੇਸੁ ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
नमस्कार है, केवल उस सर्गुण स्वरूप निरंकार को नमस्कार है।

ਆਦਿ ਅਨੀਲੁ ਅਨਾਦਿ ਅਨਾਹਤਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਏਕੋ ਵੇਸੁ ॥੨੯॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२९॥
जो सभी का मूल, रंग रहित, पवित्र स्वरूप, आदि रहित, अनश्वर व अपरिवर्तनीय स्वरूप है॥२९॥

ਏਕਾ ਮਾਈ ਜੁਗਤਿ ਵਿਆਈ ਤਿਨਿ ਚੇਲੇ ਪਰਵਾਣੁ ॥
एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥
ब्रह्म ने किसी रहस्यमयी युक्ति से माया की उत्पत्ति की, जिससे तीन पुत्र उत्पन्न हुए।

ਇਕੁ ਸੰਸਾਰੀ ਇਕੁ ਭੰਡਾਰੀ ਇਕੁ ਲਾਏ ਦੀਬਾਣੁ ॥
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥
इन में से एक ब्रह्मा सृष्टि रचयिता, एक विष्णु संसार के पोषक, और एक शिव संहारक के रूप में

दरबार लगाकर बैठ गए।

ਜਿਵ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਤਿਵੈ ਚਲਾਵੈ ਜਿਵ ਹੋਵੈ ਫੁਰਮਾਣੁ ॥

जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥

जिस तरह उस अकाल पुरख को भला लगता है उसी तरह वह इन तीनों को चलाते हैं और जैसा उनका आदेश होता है वैसा ही कार्य ये देव करते हैं।

ਓਹੁ ਵੇਖੈ ਓਨਾ ਨਦਰਿ ਨ ਆਵੈ ਬਹੁਤਾ ਏਹੁ ਵਿਡਾਣੁ ॥

ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥

यह बहुत अश्चर्यजनक बात है कि अकाल पुरुष तो सबको देखता है, परंतु उसका स्वरूप किसी को दिखाई नहीं देता।

ਆਦੇਸੁ ਤਿਸੈ ਆਦੇਸੁ ॥

आदेसु तिसै आदेसु ॥

नमस्कार है, केवल उस सर्गुण स्वरूप निरंकार को नमस्कार है।

ਆਦਿ ਅਨੀਲੁ ਅਨਾਦਿ ਅਨਾਹਤਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਏਕੋ ਵੇਸੁ ॥੩੦॥

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥

जो सभी का मूल, रंग रहित, पवित्र स्वरूप, आदि रहित, अनश्वर व अपरिवर्तनीय स्वरूप है॥ ३०॥

ਆਸਣੁ ਲੋਇ ਲੋਇ ਭੰਡਾਰ ॥

आसणु लोइ लोइ भंडार ॥

ईश्वर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में विद्यमान है, तथा ब्रह्माण्ड उसकी कृपा से परिपूर्ण है।

ਜੋ ਕਿਛੁ ਪਾਇਆ ਸੁ ਏਕਾ ਵਾਰ ॥

जो किछु पाइआ सु एका वार ॥

उस परमात्मा ने सभी भण्डारों को एक ही बार परिपूर्ण कर दिया है।

ਕਰਿ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਸਿਰਜਣਹਾਰੁ ॥

करि करि वेखै सिरजणहारु ॥

वह सृजनहार रचना कर करके सृष्टि को देख रहा है।

ਨਾਨਕ ਸਚੇ ਕੀ ਸਾਚੀ ਕਾਰ ॥

नानक सचे की साची कार ॥

हे नानक ! उस सत्यस्वरूप निरंकार की सम्पूर्ण रचना भी सत्य है।

ਆਦੇਸੁ ਤਿਸੈ ਆਦੇਸੁ ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
नमस्कार है, सिर्फ़ उस सर्गुण स्वरूप निरंकार को नमस्कार है।

ਆਦਿ ਅਨੀਲੁ ਅਨਾਦਿ ਅਨਾਹਤਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਏਕੋ ਵੇਸੁ ॥੩੧॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥
जो सभी का मूल, रंग रहित, पवित्र स्वरूप, आदि रहित, अनश्वर व अपरिवर्तनीय स्वरूप है॥ ३१॥

ਇਕ ਦੂ ਜੀਭੌ ਲਖ ਹੋਹਿ ਲਖ ਹੋਵਹਿ ਲਖ ਵੀਸ ॥
इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥
एक जिह्वा से लाख जिह्वा हो जाएँ, फिर लाख से बीस लाख हो जाएँ।

ਲਖੁ ਲਖੁ ਗੇੜਾ ਆਖੀਅਹਿ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਜਗਦੀਸ ॥
लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥
फिर एक-एक जिह्वा से लाख-लाख बार उस जगदीश्वर का एक नाम उच्चारण करें अर्थात् निशदिन उस प्रभु का नाम सिमरन किया जाए।

ਏਤੁ ਰਾਹਿ ਪਤਿ ਪਵੜੀਆ ਚੜੀਐ ਹੋਇ ਇਕੀਸ ॥
एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥
ईश्वर का स्मरण और उसकी आराधना, ईश्वर की प्राप्ति हेतु प्रथम सोपान हैं। इन्हीं सोपानों पर अग्रसर होकर आत्मा परमात्मा से एक हो सकती है।

ਸੁਣਿ ਗਲਾ ਆਕਾਸ ਕੀ ਕੀਟਾ ਆਈ ਰੀਸ ॥
सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥
वैसे तो ब्रह्म-ज्ञानियों की बड़ी-बड़ी बातें सुनकर निकृष्ट जीव भी देहाभिमान में डूबे हुए, उनका अनुकरण करने की इच्छा रखते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਪਾਈਐ ਕੂੜੀ ਕੂੜੈ ਠੀਸ ॥੩੨॥
नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥
परंतु गुरु नानक जी कहते हैं कि उस परमात्मा की प्राप्ति तो उसकी कृपा से ही होती है, वरन् ये तो मिथ्या लोगों की मिथ्या ही बातें है ॥ ३२ ॥

ਆਖਣਿ ਜੋਰੁ ਚੁਪੈ ਨਹ ਜੋਰੁ ॥

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥

अकाल पुरुष की कृपा-दृष्टि के बिना इस जीव में कुछ भी कहने व चुप रहने की शक्ति नहीं है अर्थात् रसना को चला पाना जीव के वश में नहीं है।

ਜੋਰੁ ਨ ਮੰਗਣਿ ਦੇਣਿ ਨ ਜੋਰੁ ॥

जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥

माँगने की भी इसमें ताकत नहीं है और न ही कुछ देने की समर्थता है।

ਜੋਰੁ ਨ ਜੀਵਣਿ ਮਰਣਿ ਨਹ ਜੋਰੁ ॥

जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥

यदि जीव चाहे कि मैं जीवित रहूँ तो भी इसमें सामर्थ्य नहीं है, क्योंकि कई बार मनुष्य उपचाराधीन ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, मरना भी उसके वश में नहीं है।

ਜੋਰੁ ਨ ਰਾਜਿ ਮਾਲਿ ਮਨਿ ਸੋਰੁ ॥

जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥

जिस धन, सम्पत्ति व वैभव को प्राप्त करके मन में अभिमान आता है, उसे प्राप्त करने में जीव का कोई सामर्थ्य नहीं है।

ਜੋਰੁ ਨ ਸੁਰਤੀ ਗਿਆਨਿ ਵੀਚਾਰਿ ॥

जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥

श्रुति वेदों के ज्ञान का विचार करने का भी इसमें सामर्थ्य नहीं है।

ਜੋਰੁ ਨ ਜੁਗਤੀ ਛੁਟੈ ਸੰਸਾਰੁ ॥

जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥

संसार से मुक्त होने की षट्-शास्त्रों में दी गई युक्तियाँ धारण कर लेने की शक्ति भी इसमें नहीं है।

ਜਿਸੁ ਹਥਿ ਜੋਰੁ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਸੋਇ ॥

जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥

वह एकमात्र ईश्वर है जो सृष्टि की सृष्टि करने और उसकी देखभाल करने की क्षमता रखता है।

ਨਾਨਕ ਉਤਮੁ ਨੀਚੁ ਨ ਕੋਇ ॥੩੩॥

नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥

गुरु नानक जी कहते हैं कि फिर तो यही जानना चाहिए कि इस संसार में न कोई स्वेच्छा से नीच है, न उत्तम है, वह प्रभु जिस को कर्मानुसार जैसा रखता है वैसा ही वह रहता है। ॥ ३३॥

ਰਾਤੀ ਰੁਤੀ ਥਿਤੀ ਵਾਰ ॥
राती रुती थिती वार ॥
रात्रियों, ऋतुओं, तिथियों, सप्ताह के वारों,

ਪਵਣ ਪਾਣੀ ਅਗਨੀ ਪਾਤਾਲ ॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥
वायु, जल, अग्नि व पाताल आदि सब प्रपंच है।

ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਧਰਤੀ ਥਾਪਿ ਰਖੀ ਧਰਮ ਸਾਲ ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥
स्रष्टा प्रभु ने उस में पृथ्वी रूपी धर्मशाला स्थापित करके रखी हुई है, इसी को कर्म-भूमि कहते हैं।

ਤਿਸੁ ਵਿਚਿ ਜੀਅ ਜੁਗਤਿ ਕੇ ਰੰਗ ॥
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥
उस धर्मशाला में नाना प्रकार के जीव हैं, जिनकी अनेक भांति की धर्म-कर्म की उपासना की युक्ति है और उनके श्वेत-श्यामादि अनेक प्रकार के वर्ण हैं।

ਤਿਨ ਕੇ ਨਾਮ ਅਨੇਕ ਅਨੰਤ ॥
तिन के नाम अनेक अनंत ॥
उनके अनेक प्रकार के अनंत नाम हैं।

ਕਰਮੀ ਕਰਮੀ ਹੋਇ ਵੀਚਾਰੁ ॥
करमी करमी होइ वीचारु ॥
संसार में विचरण कर रहे उन अनेकानेक जीवों को अपने शुभाशुभ कर्मों के अनुसार ही उन पर विचार किया जाता है।

ਸਚਾ ਆਪਿ ਸਚਾ ਦਰਬਾਰੁ ॥
सचा आपि सचा दरबारु ॥
विचार करने वाला वह निरंकार स्वयं भी सत्य है और उसका दरबार भी सत्य है।

ਤਿਥੈ ਸੋਹਨਿ ਪੰਚ ਪਰਵਾਣੁ ॥
तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥
वही उसके दरबार में शोभायमान होते हैं जो प्रामाणिक संत हैं,

ਨਦਰੀ ਕਰਮਿ ਪਵੈ ਨੀਸਾਣੁ ॥
नदरी करमि पवै नीसाणु ॥
जिनके माथे पर कृपालु परमात्मा की कृपा का चिन्ह अंकित होता है।

ਕਚ ਪਕਾਈ ਓਥੈ ਪਾਇ ॥
कच पकाई ओथै पाइ ॥
ईश्वर की उपस्थिति में ही आध्यात्मिक प्रगति की सफलता या असफलता निर्धारित होती है।

ਨਾਨਕ ਗਇਆ ਜਾਪੈ ਜਾਇ ॥੩੪॥
नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥
हे नानक ! इस तथ्य का निर्णय वहाँ जाकर ही होता है ॥ ३४ ॥

ਧਰਮ ਖੰਡ ਕਾ ਏਹੋ ਧਰਮੁ ॥
धरम खंड का एहो धरमु ॥
(कर्मकाण्ड में) धर्मखण्ड का यही नियम है; जो पूर्व पंक्तियों में कथन किया गया है।

ਗਿਆਨ ਖੰਡ ਕਾ ਆਖਹੁ ਕਰਮੁ ॥
गिआन खंड का आखहु करमु ॥
(गुरु नानक जी) अब दिव्य ज्ञान प्राप्ति के ज्ञानखंड के चरणों और उसकी कार्यप्रणाली का वर्णन करते हैं।

ਕੇਤੇ ਪਵਣ ਪਾਣੀ ਵੈਸੰਤਰ ਕੇਤੇ ਕਾਨ ਮਹੇਸ ॥
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥
(इस संसार में) कितने प्रकार के पवन, जल, अग्नि हैं, और कितने ही रूप कृष्ण व रुद्र (शिव) के हैं।

ਕੇਤੇ ਬਰਮੇ ਘਾੜਤਿ ਘੜੀਅਹਿ ਰੂਪ ਰੰਗ ਕੇ ਵੇਸ ॥
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥
कितने ही ब्रह्मा इस सृष्टि में अनेकानेक रूप-रंगों के भेष में जीव पैदा करते हैं।

ਕੇਤੀਆ ਕਰਮ ਭੂਮੀ ਮੇਰ ਕੇਤੇ ਕੇਤੇ ਧੂ ਉਪਦੇਸ ॥
केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥
कितनी ही कर्म-भूमियों, सुमेर-पर्वत, ध्रुव भक्त व उनके उपदेष्टा हैं।

ਕੇਤੇ ਇੰਦ ਚੰਦ ਸੂਰ ਕੇਤੇ ਕੇਤੇ ਮੰਡਲ ਦੇਸ ॥
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥
इन्द्र व चंद्रमा भी कितने हैं, कितने ही सूर्य, कितने ही ग्रहमण्डल हैं।

ਕੇਤੇ ਸਿਧ ਬੁਧ ਨਾਥ ਕੇਤੇ ਕੇਤੇ ਦੇਵੀ ਵੇਸ ॥
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥
कितने ही सिद्ध, विद्वान व नाथ हैं, कितने ही देवियों के स्वरूप हैं।

ਕੇਤੇ ਦੇਵ ਦਾਨਵ ਮੁਨਿ ਕੇਤੇ ਕੇਤੇ ਰਤਨ ਸਮੁੰਦ ॥
केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥
कितने ही देव, दैत्य व मुनि हैं और रत्नों से भरपूर कितने ही समुद्र हैं।

ਕੇਤੀਆ ਖਾਣੀ ਕੇਤੀਆ ਬਾਣੀ ਕੇਤੇ ਪਾਤ ਨਰਿੰਦ ॥
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥
कितने ही उत्पत्ति के स्रोत हैं (अण्डज-जरायुजादि), कितनी प्रकार की वाणी है (परा, पश्यन्ती आदि) कितने ही बादशाह हैं और कितने ही राजा हैं।

ਕੇਤੀਆ ਸੁਰਤੀ ਸੇਵਕ ਕੇਤੇ ਨਾਨਕ ਅੰਤੁ ਨ ਅੰਤੁ ॥੩੫॥
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥
कितनी ही वेद-श्रुतियाँ हैं, उनके सेवक भी कितने ही हैं, गुरु नानक जी कहते हैं कि उसकी रचना का कोई अन्त नहीं है; इन सबके अन्त का बोध ज्ञान-खण्ड में जाने से होता है, जहाँ पर जीव ज्ञानवान हो जाता है ॥ ३५ ॥

ਗਿਆਨ ਖੰਡ ਮਹਿ ਗਿਆਨੁ ਪਰਚੰਡੁ ॥
गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥
ज्ञान खण्ड में जो ज्ञान कथित है वह प्रबल है।

ਤਿਥੈ ਨਾਦ ਬਿਨੋਦ ਕੋਡ ਅਨੰਦੁ ॥
तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥
इस खण्ड में रागमयी, प्रसन्नतापूर्ण व कौतुकी आनंद विद्यमान है।

ਸਰਮ ਖੰਡ ਕੀ ਬਾਣੀ ਰੂਪੁ ॥
सरम खंड की बाणी रूपु ॥
(श्रम खंड में परमेश्वर की भक्ति को प्रमुख माना गया है) परमेश्वर की भक्ति करने का उद्यम

करने वाले संतजनों की वाणी मधुर होती है।

ਤਿਥੈ ਘਾੜਤਿ ਘੜੀਐ ਬਹੁਤੁ ਅਨੂਪੁ ॥

तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥

इस अवस्था में (श्रम खण्ड में) प्रबुद्ध मन द्वारा अद्वितीय सुन्दरता वाले स्वरूप की रचना होती है।

ਤਾ ਕੀਆ ਗਲਾ ਕਥੀਆ ਨਾ ਜਾਹਿ ॥ਜੇ ਕੋ ਕਹੈ ਪਿਛੈ ਪਛੁਤਾਇ ॥

ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥जे को कहै पिछै पछुताइ ॥

उनकी बातों का कथन नहीं किया जा सकता। यदि कोई उनकी महिमा कथन करने की चेष्टा करता भी है तो उसे बाद में पछताना पड़ता है।

ਤਿਥੈ ਘੜੀਐ ਸੁਰਤਿ ਮਤਿ ਮਨਿ ਬੁਧਿ ॥

तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥

चेतना, बुद्धि, मन और विवेक को नया आकार एवं दिशा दी जाती है।

ਤਿਥੈ ਘੜੀਐ ਸੁਰਾ ਸਿਧਾ ਕੀ ਸੁਧਿ ॥੩੬॥

तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥

वहाँ पर दिव्य बुद्धि वाले देवों व सिद्ध अवस्था की प्राप्ति वाली सूझ गढ़ी जाती है॥ ३६॥

ਕਰਮ ਖੰਡ ਕੀ ਬਾਣੀ ਜੋਰੁ ॥

करम खंड की बाणी जोरु ॥

जिन उपासकों पर परमेश्वर की कृपा हुई उनकी वाणी शक्तिवान हो जाती है।

ਤਿਥੈ ਹੋਰੁ ਨ ਕੋਈ ਹੋਰੁ ॥

तिथै होरु न कोई होरु ॥

जहाँ पर ये उपासक विद्यमान होते हैं वहाँ पर कोई और नहीं होता।

ਤਿਥੈ ਜੋਧ ਮਹਾਬਲ ਸੂਰ ॥

तिथै जोध महाबल सूर ॥

उन उपासकों में देह को जीतने वाले योद्धा, इन्द्रियों को जीतने वाला महाबली तथा शूरवीर होते हैं।

ਤਿਨ ਮਹਿ ਰਾਮੁ ਰਹਿਆ ਭਰਪੂਰ ॥

तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥

उन में प्रभु राम परिपूर्ण रहते हैं।

ਤਿਥੈ ਸੀਤੋ ਸੀਤਾ ਮਹਿਮਾ ਮਾਹਿ ॥

तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥

ऐसी अवस्था में उपासक पूरी तरह से परमेश्वर की स्तुति में तल्लीन रहते हैं।

ਤਾ ਕੇ ਰੂਪ ਨ ਕਥਨੇ ਜਾਹਿ ॥

ता के रूप न कथने जाहि ॥

ऐसा स्वरूप प्राप्त करने वालों के गुण कथन नहीं किए जा सकते।

ਨਾ ਓਹਿ ਮਰਹਿ ਨ ਠਾਗੇ ਜਾਹਿ ॥ਜਿਨ ਕੈ ਰਾਮੁ ਵਸੈ ਮਨ ਮਾਹਿ ॥

ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥जिन कै रामु वसै मन माहि ॥

वे उपासक न तो मरते हैं और न ही ठगे जाते हैं, जिनके हृदय में परमात्मा राम का स्वरूप विद्यमान होता है।

ਤਿਥੈ ਭਗਤ ਵਸਹਿ ਕੇ ਲੋਅ ॥

तिथै भगत वसहि के लोअ ॥

वहाँ कई लोकों के भक्त निवास करते हैं।

ਕਰਹਿ ਅਨੰਦੁ ਸਚਾ ਮਨਿ ਸੋਇ ॥

करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥

जिनके हृदय में सत्यस्वरूप निरंकार वास करता है, वे आनंद प्राप्त करते हैं।

ਸਚ ਖੰਡਿ ਵਸੈ ਨਿਰੰਕਾਰੁ ॥

सच खंडि वसै निरंकारु ॥

सत्य धारण करने वालों के हृदय (सचखण्ड) में वह निरंकार निवास करता है; अर्थात् वैकुण्ठ लोक, जहाँ सद्‌गुणी व्यक्तियों का वास हैं), में वह सर्गुण स्वरूप परमात्मा रहता है।

ਕਰਿ ਕਰਿ ਵੇਖੈ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲ ॥

करि करि वेखै नदरि निहाल ॥

यह सृजनहार परमात्मा अपनी सृजना को रच-रचकर कृपा-दृष्टि से देखता है अर्थात् उसका पोषण करता है।

ਤਿਥੈ ਖੰਡ ਮੰਡਲ ਵਰਭੰਡ ॥

तिथै खंड मंडल वरभंड ॥

उस सचखण्ड में अनन्त ही खण्ड, मण्डल व ब्रह्माण्ड है।

ਜੇ ਕੋ ਕਥੈ ਤ ਅੰਤ ਨ ਅੰਤ ॥
जे को कथै त अंत न अंत ॥
यदि कोई उसके अन्त को कथन करे तो अन्त नहीं पा सकता, क्योंकि वह असीम है।

ਤਿਥੈ ਲੋਅ ਲੋਅ ਆਕਾਰ ॥
तिथै लोअ लोअ आकार ॥
वहाँ अनेकानेक लोक विद्यमान है और उनमें रहने वालों के अस्तित्व भी अनेक हैं।

ਜਿਵ ਜਿਵ ਹੁਕਮੁ ਤਿਵੈ ਤਿਵ ਕਾਰ ॥
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥
फिर जिस तरह वह सर्वशक्तिमान परमात्मा आदेश करता है उसी तरह वे कार्य करते हैं।

ਵੇਖੈ ਵਿਗਸੈ ਕਰਿ ਵੀਚਾਰੁ ॥
वेखै विगसै करि वीचारु ॥
अपने इस रचे हुए प्रपंच को देख कर व शुभाशुभ कर्मों को विचार कर वह प्रसन्न होता है।

ਨਾਨਕ ਕਥਨਾ ਕਰੜਾ ਸਾਰੁ ॥੩੭॥
नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥
गुरु नानक जी कहते हैं कि उस निरंकार के मूल-तत्व का जो मैंने उल्लेख किया है उसे कथन करना अत्यंत कठिन है ॥३७॥

ਜਤੁ ਪਾਹਾਰਾ ਧੀਰਜੁ ਸੁਨਿਆਰੁ ॥
जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥
इद्रिय-निग्रह रूपी भट्ठी हो, संयम रूपी सुनार हो।

ਅਹਰਣਿ ਮਤਿ ਵੇਦੁ ਹਥੀਆਰੁ ॥
अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
अचल बुद्धि रूपी अहरन हो, गुरु ज्ञान रूपी हथौड़ा हो।

ਭਉ ਖਲਾ ਅਗਨਿ ਤਪ ਤਾਉ ॥
भउ खला अगनि तप ताउ ॥
निरंकार के भय को धौंकनी तथा तपोमय जीवन को अग्नि ताप बनाओ।

ਭਾਂਡਾ ਭਾਉ ਅੰਮ੍ਰਿਤੁ ਤਿਤੁ ਢਾਲਿ ॥
भांडा भाउ अम्रितु तितु ढालि ॥
हृदय - प्रेम को बर्तन बनाकर उसमें नाम - अमृत को गलाया जाए।

ਘੜੀਐ ਸਬਦੁ ਸਚੀ ਟਕਸਾਲ ॥
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥
इसी सच्ची टकसाल में नैतिक जीवन को रचा जाता है। अर्थात्-ऐसी टकसाल से ही सद्‌गुणी जीवन बनाया जा सकता है।

ਜਿਨ ਕਉ ਨਦਰਿ ਕਰਮੁ ਤਿਨ ਕਾਰ ॥
जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥
जिन पर अकाल पुरुष की कृपा-दृष्टि होती है, उन्हीं को ये कार्य करने को मिलते हैं।

ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਨਦਰਿ ਨਿਹਾਲ ॥੩੮॥
नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥
हे नानक ! ऐसे सद्‌गुणी जीव उस कृपासागर परमात्मा की कृपा-दृष्टि के कारण कृतार्थ होते हैं। ॥ ३८ ॥

ਸਲੋਕੁ ॥
सलोकु ॥
श्लोक : ॥

ਪਵਣੁ ਗੁਰੂ ਪਾਣੀ ਪਿਤਾ ਮਾਤਾ ਧਰਤਿ ਮਹਤੁ ॥
पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
समस्त सृष्टि का गुरु पवन है, पानी पिता है, और पृथ्वी बड़ी माता है।

ਦਿਵਸੁ ਰਾਤਿ ਦੁਇ ਦਾਈ ਦਾਇਆ ਖੇਲੈ ਸਗਲ ਜਗਤੁ ॥
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
दिन और रात दोनों धाय एवं धीया (बच्चों को खिलाने वाले) के समान हैं तथा सम्पूर्ण जगत् इन दोनों की गोद में खेल रहा है।

ਚੰਗਿਆਈਆ ਬੁਰਿਆਈਆ ਵਾਚੈ ਧਰਮੁ ਹਦੂਰਿ ॥
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥
शुभ व अशुभ कर्मों का विवेचन उस अकाल-पुरुष के दरबार में होगा।

ਕਰਮੀ ਆਪੋ ਆਪਣੀ ਕੇ ਨੇੜੈ ਕੇ ਦੂਰਿ ॥

करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥

अपने शुभाशुभ कर्मों के फलस्वरूप ही जीव परमात्मा के निकट अथवा दूर होता है।

ਜਿਨੀ ਨਾਮੁ ਧਿਆਇਆ ਗਏ ਮਸਕਤਿ ਘਾਲਿ ॥

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥

जिन्होंने प्रभु का नाम सिमरन किया है, वे जप-तप आदि की गई मेहनत को सफल कर गए हैं।

ਨਾਨਕ ਤੇ ਮੁਖ ਉਜਲੇ ਕੇਤੀ ਛੁਟੀ ਨਾਲਿ ॥੧॥

नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥

गुरु नानक देव जी कथन करते हैं कि ऐसे सद्प्राणियों के मुख उज्ज्वल हुए हैं और कितने ही जीव उनके साथ, अर्थात् उनका अनुसरण करके, आवागमन के चक्र से मुक्त हो गए हैं।॥ १॥

ਅਰਦਾਸ
प्रार्थना

ੴ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ॥
ईश्वर एक है। सारी विजय विलक्षण गुरु (भगवान्) की है।

ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਸਹਾਇ।
आदरणीय तलवार या कृपाण (दुष्टों का नाश करने वाले भगवान्) हमारी सहायता करें!

ਵਾਰ ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਕੀ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦||
दसवें गुरु द्वारा सुनाई गई आदरणीय तलवार की कविता ।

ਪ੍ਰਿਥਮ ਭਗੌਤੀ ਸਿਮਰਿ ਕੈ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਲਈਂ ਧਿਆਇ॥
पहले तलवार को याद करो (दुष्टों का नाश करने वाले भगवान्); फिर गुरु नानक को याद करें (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें)

ਫਿਰ ਅੰਗਦ ਗੁਰ ਤੇ ਅਮਰਦਾਸੁ ਰਾਮਦਾਸੈ ਹੋਈਂ ਸਹਾਇ॥
फ़िर श्री गुरु अंगद, श्री गुरु अमर दास और गुरु राम दास का स्मरण और ध्यान करो; वे हमारी मदद करें ! (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਅਰਜਨ ਹਰਗੋਬਿੰਦ ਨੋ ਸਿਮਰੌਂ ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਰਾਇ॥
श्री गुरु अर्जन, गुरु हरगोबिंद और गुरु हर राय का स्मरण और ध्यान करो। (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਧਿਆਈਐ ਜਿਸ ਡਿਠੈ ਸਭਿ ਦੁਖ ਜਾਇ॥
पूज्य गुरु हर कृष्ण का स्मरण और ध्यान करें, जिनके दर्शन मात्र से सारे कष्ट मिट जाते हैं। (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਸਿਮਰਿਐ ਘਰ ਨਉ ਨਿਧਿ ਆਵੈ ਧਾਇ॥
गुरु तेग बहादुर को याद करें और फिर आध्यात्मिक धन के नौ स्रोत (धैर्य, क्षमा दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुधि, विद्या सत्य, अक्रोध) आपके घर में तेजी से आएंगे।

ਸਭ ਥਾਂਈ ਹੋਇ ਸਹਾਇ॥
हे प्रभु ! कृपया पथ प्रदर्शन कर सर्वत्र हमारी सहायता करें।

ਦਸਵਾਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ! ਸਭ ਥਾਂਈ ਹੋਇ ਸਹਾਇ॥
आदरणीय दसवें गुरु गोबिंद सिंह (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें) को याद करें। हे भगवान्! कृपया पथ प्रदर्शन कर सर्वत्र हमारी सहायता करें।

ਦਸਾਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀਆਂ ਦੀ ਜੋਤ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਪਾਠ ਦੀਦਾਰ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
आदरणीय गुरु ग्रंथ साहिब में निहित दस राजाओं के दिव्य प्रकाश पर विचार करें और ध्यान करें और अपने विचारों को गुरु ग्रंथ साहिब की दिव्य शिक्षाओं की ओर मोड़ें और आनंद प्राप्त करें; बोले वाहेगुरु!(विलक्षण गुरु)

ਪੰਜਾਂ ਪਿਆਰਿਆਂ, ਚੌਹਾਂ ਸਾਹਿਬਜ਼ਾਦਿਆਂ, ਚਾਲ੍ਹੀਆਂ ਮੁਕਤਿਆਂ, ਹਠੀਆਂ ਜਪੀਆਂ, ਤਪੀਆਂ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨਾਮ ਜਪਿਆ, ਵੰਡ ਛਕਿਆ, ਦੇਗ ਚਲਾਈ, ਤੇਗ ਵਾਹੀ, ਦੇਖ ਕੇ ਅਣਡਿੱਠ ਕੀਤਾ, ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਪਿਆਰਿਆਂ, ਸਚਿਆਰਿਆਂ ਦੀ ਕਮਾਈ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ, ਖਾਲਸਾ ਜੀ ! ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
पाँच प्यारे, (गुरु गोबिंद सिंह के)चार पुत्रों के कर्मों के बारे में सोचो; चालीस शहीदों में से; अदम्य दृढ़ संकल्प के बहादुर सिक्खों की; नाम के रंग में डूबे भक्तों की; उनमें से जो नाम में विलीन थे; उन्हें जिन्होंने नाम का स्मरण किया और साथ में भोजन किया; उन्हें जिन्होंने नि:शुल्क रसोई शुरू की; उन्हें जिन्होंने अपनी तलवारें चलाईं (सत्य की रक्षा के लिए); दूसरों की कमियों को नज़रअंदाज करने वालों को; उपरोक्त सभी शुद्ध और वास्तव में समर्पित व्यक्ति थे; बोल वाहे गुरु!(विलक्षण गुरु)

ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਿੰਘਾਂ ਸਿੰਘਣੀਆਂ ਨੇ ਧਰਮ ਹੇਤ ਸੀਸ ਦਿੱਤੇ, ਬੰਦ ਬੰਦ ਕਟਾਏ, ਖੋਪਰੀਆਂ ਲੁਹਾਈਆਂ, ਚਰਖੜੀਆਂ ਤੇ ਚੜੇ, ਆਰਿਆਂ ਨਾਲ ਚਿਰਾਏ ਗਏ, ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਲਈ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਕੀਤੀਆਂ, ਧਰਮ ਨਹੀਂ ਹਾਰਿਆ, ਸਿੱਖੀ ਕੇਸਾਂ ਸੁਆਸਾਂ ਨਾਲ ਨਿਬਾਹੀ, ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕਮਾਈ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ! ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
उन वीर सिक्ख पुरुषों और स्त्रियों की अनुपम सेवा को सोचो और याद करो, जिन्होंने अपना सिर न्यौछावर कर दिए, किन्तु सिक्ख धर्म का समर्पण नहीं किया; जिन्होंने शरीर के एक-एक जोड़ के टुकड़े-टुकड़े कर लिए; जिन्होंने अपनी सिर की खाल निकलवा दी; जिन्हें बांधकर पहियों पर घुमाया जाता था और उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाते थे; जिन्हें आरी से काटा गया था; जिवित खालें उतारी गईं; जिन्होंने गुरुद्वारों की मर्यादा बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया; जिन्होंने अपने सिक्ख धर्म को नहीं छोड़ा; जिन्होंने अपना सिक्ख धर्म रखा और अपने लंबे केशों को आखिरी सांस तक सहेज कर रखा; बोल वाहे गुरु!

ਪੰਜਾਂ ਤਖਤਾਂ, ਸਰਬੱਤ ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
अपने विचारों को सिक्ख धर्म के सभी सिंहासनों और सभी गुरुद्वारों की ओर केंद्रित करें; बोलो वाहे गुरु!

ਪ੍ਰਿਥਮੇ ਸਰਬੱਤ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੀ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਜੀ, ਸਰਬੱਤ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੋ ਵਾਹਿਗੁਰੂ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਚਿਤ ਆਵੇ, ਚਿੱਤ ਆਵਨ ਕਾ ਸਦਕਾ ਸਰਬ ਸੁਖ ਹੋਵੇ।
पहले तो सारे आदरणीय खालसा यह दुआ करते हैं कि वे आपके नाम का ध्यान करें; और इस तरह के ध्यान के माध्यम से सभी सुख और आराम मिलें।

ਜਹਾਂ ਜਹਾਂ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਸਾਹਿਬ, ਤਹਾਂ ਤਹਾਂ ਰਛਿਆ ਰਿਆਇਤ, ਦੇਗ ਤੇਗ ਫ਼ਤਹਿ, ਬਿਰਦ ਕੀ ਪੈਜ, ਪੰਥ ਕੀ ਜੀਤ, ਸ੍ਰੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਹਾਇ, ਖਾਲਸੇ ਜੀ ਕੇ ਬੋਲ ਬਾਲੇ, ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ !
जहाँ भी आदरणीय खालसा उपस्थित हों, अपनी सुरक्षा और कृपा प्रदान करें; नि:शुल्क रसोई और तलवार कभी विफल न हो; अपने भक्तों का मान बनाए रखना; सिक्ख लोगों को विजय दिलाओ; सम्मानित तलवार हमेशा हमारी सहायता के लिए आए; खालसा का सदा सम्मान हो ; बोले वाहे गुरु!

ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਸਿੱਖੀ ਦਾਨ, ਕੇਸ ਦਾਨ, ਰਹਿਤ ਦਾਨ, ਬਿਬੇਕ ਦਾਨ, ਵਿਸਾਹ ਦਾਨ, ਭਰੋਸਾ ਦਾਨ, ਦਾਨਾਂ ਸਿਰ ਦਾਨ, ਨਾਮ ਦਾਨ, ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀ ਦੇ ਇਸ਼ਨਾਨ, ਚੌਂਕੀਆਂ, ਝੰਡੇ, ਬੁੰਗੇ, ਜੁਗੋ ਜੁਗ ਅਟੱਲ, ਧਰਮ ਕਾ ਜੈਕਾਰ, ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ! ! !
सिक्खों को सिक्ख धर्म का दान, लंबे केशों का दान, सिक्ख धर्म का दान, दिव्य ज्ञान का दान, दृढ़ विश्वास का दान, विश्वास का दान और नाम का सबसे बड़ा उपहार प्रदान करें। हे प्रभु ! राग-रागी, हवेली और झंडे हमेशा के लिए स्थित रहें; सत्य की हमेशा विजय हो; बोलो वाहे गुरु!

ਸਿੱਖਾਂ ਦਾ ਮਨ ਨੀਵਾਂ, ਮਤ ਉੱਚੀ ਮਤ ਦਾ ਰਾਖਾ ਆਪ ਵਾਹਿਗੁਰੂ।
सभी सिक्खों का मन विनम्र रहे और उनका ज्ञान ऊंचा रहे; हे प्रभु ! आप ज्ञान के रक्षक हैं।

ਹੇ ਨਿਮਾਣਿਆਂ ਦੇ ਮਾਣ, ਨਿਤਾਣਿਆਂ ਦੇ ਤਾਣ, ਨਿਓਟਿਆਂ ਦੀ ਓਟ, ਸੱਚੇ ਪਿਤਾ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ! ਆਪ ਦੇ ਹਜ਼ੂਰ.....ਦੀ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਜੀ।
हे सच्चे पातशाह, वाहे गुरु! आप नम्र लोगों के मान हैं, असहायों की शक्ति हैं, आश्रयहीनों के आश्रय हैं, हम विनम्रतापूर्वक आपकी उपस्थिति में प्रार्थना करते हैं... .. (यहाँ किए गए अवसर या प्रार्थना को प्रतिस्थापित करें) ।

ਅੱਖਰ ਵਾਧਾ ਘਾਟਾ ਭੁੱਲ ਚੁੱਕ ਮਾਫ ਕਰਨੀ। ਸਰਬੱਤ ਦੇ ਕਾਰਜ ਰਾਸ ਕਰਨੇ।

कृपया उपरोक्त प्रार्थना को पढ़ने में हमारे दोषों और कमियों को क्षमा करें। कृपया सभी के उद्देश्यों को पूरा करें।

ਸੇਈ ਪਿਆਰੇ ਮੇਲ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਮਿਲਿਆਂ ਤੇਰਾ ਨ ਚਿੱਤਆਵੇ। ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਚੜ੍ਹਦੀ ਕਲਾ, ਤੇਰੇ ਭਾਣੇ ਸਰਬੱਤ ਦਾ ਭਲਾ।

हमें उन सच्चे भक्तों से मिलाने की कृपा करें जिनसे हम आपके नाम का स्मरण और ध्यान कर सकें। हे परमेश्वर! सच्चे गुरु नानक के माध्यम से, आपका नाम ऊँचा हो सकता है, और आपकी इच्छा के अनुसार सभी समृद्ध हो सकते हैं।

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕਾ ਖ਼ਾਲਸਾ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ ।

खालसा भगवान् का है; सभी विजय भगवान् की विजय है।

आत्मा की यात्रा पर निकलें: अपनी आत्मा का पोषण करें

अपनी आध्यात्मिक यात्रा को उन्नत करने और जीवन में गहन अर्थ खोजने के लिए प्रथाओं की खोज करें।

यात्रा के लिए सिख धर्म के तीन मूलभूत सिद्धांत :

नाम जपना : ईश्वर का स्मरण

किरत करनी : ईमानदारी से काम करो

वंड छकना : दूसरों के साथ साझा करना

ये हमारा आध्यात्मिक मुक्ति और एक न्यायपूर्ण समाज की ओर अग्रसर करते हैं । गुरु ग्रंथ साहिब में निहित ये सिद्धांत सिख जीवन का आधार हैं।

चौथे गुरु रामदास जी के दैनिक अभ्यास के लिए ज्ञान : गुरु ग्रंथ साहिब (पृष्ठ 305-306) में, उन्होंने एक सिक्ख की दैनिक आध्यात्मिक यात्रा के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान की है:

1. **दिन का प्रथम कार्य:** गुरु का सच्चा शिष्य प्रत्येक दिन का प्रारम्भ प्रेमपूर्वक ईश्वर का स्मरण करके करता है।

2. **शरीर और मन को शुद्ध करें:** सुबह जल्दी उठें, स्नान करें और ईश्वर के स्मरण में डूब जाएं, ऐसा महसूस करें कि आपकी आत्मा दिव्य अमृत में नहा रही है।

3. **स्मरण के माध्यम से मुक्ति:** गुरु की शिक्षाओं का पालन करने और भक्ति के साथ ईश्वर के नाम का स्मरण करने से सांसारिक आसक्तियों के कारण उत्पन्न दुःख और आंतरिक अशांति दूर हो जाती है।

4. **गाएँ और चिंतन करें:** निरंतर दिव्य स्तुति गाएं और अपने दैनिक कार्यों में दिव्य नाम का चिंतन करें।

5. **शांति का प्रकाश स्तम्भ बनें:** गुरु का अनुयायी जो हर सांस के साथ ईश्वरीय के नाम का प्रेमपूर्वक स्मरण करता है, वह एक शांत और प्रेरणादायक आत्मा बन जाती है।

6. **दिव्य ज्ञान प्राप्त करें:** गुरु यह दिव्य ज्ञान उन लोगों को प्रदान करते हैं जिन्होंने उनकी कृपा अर्जित की है।

7. **दूसरों को प्रेरित करें:** गुरु नानक उस शिष्य को नमन करते हैं जो न केवल ईश्वरीय

नाम का स्मरण करता है बल्कि दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है।

8. **दुर्लभ एवं बहुमूल्य आत्माएं:** सच्चे रूप से समर्पित व्यक्ति दुर्लभ होते हैं, फिर भी ईश्वर के प्रति उनके स्मरण से असंख्य अन्य लोगों को आध्यात्मिक रूप से लाभ होता है।

9. **नकारात्मकता से बचें:** उन लोगों से दूरी बनाए रखें जो गुरु की शिक्षाओं की अवहेलना करते हैं और आध्यात्मिक अज्ञानता के चक्र में फँसे रहते हैं। उन लोगों से सावधान रहें जो आपके सामने मीठी-मीठी बातें करते हैं, लेकिन पीठ पीछे नकारात्मकता फैलाते हैं।

यात्रा के लिए दर्शन

सिक्ख धर्म के दर्शनशास्त्र की विशेषता आध्यात्मिक और भौतिक दुनिया के लिए तर्क, व्यापकता और "तामझाम रहित" दृष्टिकोण है। इसका धर्मशास्त्र सादगी द्वारा चिह्नित है। सिक्ख नैतिकता में व्यक्ति के स्वयं के प्रति कर्त्तव्य और समाज (संगत) के प्रति कर्त्तव्य के बीच कोई संघर्ष नहीं है।

सिक्ख धर्म लगभग 500 साल पहले गुरु नानक द्वारा स्थापित सबसे कम उम्र का विश्व धर्म है। यह ब्रह्मांड के एक सर्वोच्च अस्तित्व और निर्माता (वाहेगुरु) में विश्वास पर बल देता है। यह शाश्वत आनंद के लिए एक सरल सीधा मार्ग प्रदान करता है और प्रेम और विश्वव्यापी भाईचारे का संदेश फैलाता है। सिक्ख धर्म दृढ़ता से एक एकेश्वरवादी विश्वास है और भगवान् को एकमात्र ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचानता है जो समय या स्थान की सीमाओं के अधीन नहीं है।

सिक्ख धर्म का मानना है कि ईश्वर केवल एक ही है, जो निर्माता, निर्वाहक, विनाशक है और मानव रूप नहीं लेता है। सिक्ख धर्म में अवतार के सिद्धांत का कोई स्थान नहीं है। यह देवी-देवताओं और अन्य देवी-देवताओं को कोई मूल्य नहीं देता है।

सिक्ख धर्म में नैतिकता और धर्म एक साथ चलते हैं। आध्यात्मिक विकास की दिशा में क़दम बढ़ाने के लिए व्यक्ति को दैनिक जीवन में नैतिक गुणों को अपने मन में धारण करना चाहिए और सद्‌गुणों का अभ्यास करना चाहिए। ईमानदारी, करुणा, उदारता, धैर्य और विनम्रता जैसे गुणों को केवल प्रयासों और मन की दृढ़ता से ही विकसित किया जा सकता है। हमारे महान गुरुओं का जीवन इस दिशा में प्रेरणा का स्रोत है।

सिक्ख धर्म सिखाता है कि मानव जीवन का लक्ष्य जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ना और ईश्वर में विलीन होना है। यह गुरु की शिक्षाओं का पालन, पवित्र नाम (नाम) पर ध्यान और सेवा और दान के कार्यों के संपादन से पूरा किया जा सकता है।

नाम मार्ग भगवान् के स्मरण के लिए दैनिक भक्ति पर बल देता है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए पांच भावनाओं, अर्थात, काम (इच्छा), क्रोध (क्रोध), लोभ (लालच), मोह (सांसारिक लगाव) और अहंकार (अभिमान) को नियंत्रित करना होगा। संघ अनुष्ठान और नियमित प्रथाओं जैसे उपवास और तीर्थयात्रा, शकुन और तपस्या को सिक्ख धर्म में अस्वीकार कर दिया गया है। मानव जीवन का लक्ष्य भगवान् के साथ विलीन होना है और यह गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं का पालन करके पूरा किया जाता है। सिक्ख धर्म भक्ति मार्ग या निष्ठा मार्ग पर बल देता है। यद्यपि, यह ज्ञान मार्ग (ज्ञान का मार्ग) और कर्म मार्ग (कार्य का मार्ग) के महत्व को पहचानता है। यह आध्यात्मिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए ईश्वर की कृपा अर्जित करने की आवश्यकता पर सबसे अधिक बल देता है।

सिक्ख धर्म एक आधुनिक, तार्किक और व्यावहारिक धर्म है। यह मानता है कि सामान्य पारिवारिक जीवन (गृहस्थ) मोक्ष के लिए कोई बाधा नहीं है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य या संसार का त्याग आवश्यक नहीं है। सांसारिक व्याधियों और प्रलोभनों के बीच अलग रहना संभव है। एक भक्त को संसार में रहना चाहिए और फिर भी अपने सिर को सामान्य तनाव और प्रलोभनों से स्वयं को दूर रखना चाहिए। वह एक विद्वान सैनिक और भगवान् के लिए संत होना चाहिए।

सिक्ख धर्म समस्त संसार का एक "धर्मनिरपेक्ष धर्म" है और इस प्रकार जाति, संप्रदाय, वंश या लिंग के आधार पर सभी भेदों को अमान्य करता है। यह मानता है कि सभी मनुष्य ईश्वर की दृष्टि में समान हैं। गुरुओं ने महिलाओं की समानता पर बल दिया और कन्या भ्रूण हत्या और सती प्रथा को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह का भी सक्रिय रूप से प्रचार किया और पर्दा प्रथा (महिलाओं का पर्दा पहनने) को अस्वीकार कर दिया। मन को ईश्वर पर केंद्रित करने के लिए व्यक्ति को पवित्र नाम (नाम) का ध्यान करना चाहिए और सेवा और दान के कार्यों को करना चाहिए। ईमानदारी से काम करके (किरत करना) अपनी आजीविका अर्जित करना सम्माननीय माना जाता है, न कि भीख मांग कर या बेईमानी से । वंद छकना, दूसरों के साथ साझा करना भी एक सामाजिक जिम्मेदारी है। व्यक्ति से जरूरतमंद लोगों की मदद, दसवंध (अपनी कमाई का 10%) के माध्यम से करने की उम्मीद की जाती है। सेवा, सामुदायिक सेवा भी सिक्ख धर्म का अभिन्न अंग है। सभी धर्मों के लोगों के लिए खुली हर गुरुद्वारे में मिलने वाली निःशुल्क सामुदायिक रसोई (लंगर) इस सामुदायिक सेवा की एक अभिव्यक्ति है।

सिक्ख धर्म आशावाद और आशा की वकालत करता है। यह निराशावाद की विचारधारा को स्वीकार नहीं करता है।

गुरुओं का मानना था कि इस जीवन का उद्देश्य और एक लक्ष्य है। यह आत्मज्ञान और ईश्वर की प्राप्ति का अवसर प्रदान करता है। इसके अलावा मनुष्य अपने कार्यों के लिए स्वयं उत्तरदायी है। वह अपने कार्यों के परिणामों से प्रतिरक्षा का दावा नहीं कर सकता। इसलिए वह जो करता है उसमें बहुत सतर्क रहना चाहिए।

सिक्ख ग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब, शाश्वत गुरु हैं। यह एकमात्र धर्म है जिसने पवित्र पुस्तक को एक धार्मिक गुरु का पद दिया है। सिक्ख धर्म में जीवित मानव गुरु (देहधारी) के लिए कोई स्थान नहीं है।

महिलाओं की भूमिका

सिक्ख धर्म के सिद्धांतों में कहा गया है कि महिलाओं के पास पुरुषों के समान ही आत्माएं हैं और उनकी आध्यात्मिकता को विकसित करने का समान अधिकार है। वे धार्मिक सभाओं का नेतृत्व कर सकती हैं, अखंड पथ (पवित्र शास्त्रों का निरंतर पाठ) में भाग ले सकती हैं, कीर्तन (भजनों का सामूहिक गायन) कर सकती हैं, ग्रन्थियों (पुजारियों) के रूप में काम कर सकती हैं। वे सभी धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों में भाग ले सकती हैं। सिक्ख धर्म पुरुषों और महिलाओं को समानता देने वाला पहला प्रमुख विश्व धर्म था। गुरु नानक ने लिंग आधारित समानता का उपदेश दिया, और उनके बाद आने वाले गुरुओं ने महिलाओं को सिक्ख पूजा और अभ्यास की सभी गतिविधियों में पूर्ण भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"महिला और पुरुष, सभी भगवान् द्वारा बनाए गए हैं। यह सब भगवान् का खेल है। नानक कहते हैं, तेरी सारी रचना अच्छी और पवित्र है" -गुरु ग्रंथ पृष्ठ 304

सिक्ख इतिहास ने पुरुषों की सेवा, भक्ति, बलिदान और बहादुरी में महिलाओं की भूमिका को समान रूप से चित्रित किया है। सिक्ख परंपरा में महिलाओं की नैतिक गरिमा, सेवा और आत्म-बलिदान के कई उदाहरण लिखे गए हैं।

सिक्ख धर्म के अनुसार पुरुष और महिला एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अंतर्संबंधों और अन्योन्याश्रय की व्यवस्था में जहाँ पुरुष स्त्री से जन्म लेता है, और स्त्री पुरुष के बीज से पैदा होती है। सिक्ख धर्म के अनुसार एक पुरुष एक महिला के बिना अपने जीवन में सुरक्षित और पूर्ण महसूस नहीं कर सकता है, और एक पुरुष की सफलता उस महिला के प्यार और समर्थन से संबंधित है जो उसके साथ अपना जीवन साझा करती है, और इसके विपरीत। गुरु नानक ने कहा: "[यह] एक महिला है जो दौड़ को जारी रखती है" और हमें "महिला को शापित और निंदित नहीं समझना चाहिए, [जब] महिला से नेता और राजा पैदा होते हैं।" SGGS पृष्ठ 473.

उद्धार: उठाने के लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि क्या कोई धर्म महिलाओं को मोक्ष प्राप्त करने, भगवान् की प्राप्ति या उच्चतम आध्यात्मिक क्षेत्र प्राप्त करने में सक्षम मानता है। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है," सभी प्राणियों में ईश्वर व्यापक हैं, ईश्वर सभी रूपों में पुरुष और महिलामें व्यापत हैं" (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 605)।

गुरु ग्रंथ साहिब के उपरोक्त कथन के अनुसार, ईश्वर का प्रकाश दोनों लिंगों के साथ समान रूप से रहता है। इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों गुरु की शिक्षाओं का पालन करके समान रूप से मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। कई धर्मों में स्त्री को पुरुष की आध्यात्मिकता में बाधक माना जाता है,किन्तु सिक्ख धर्म में नहीं। गुरु ने इसे अस्वीकार कर दिया। 'सिक्ख धर्म पर वर्तमान विचार' में,

ऐलिस बसरके कहते हैं, "पहले गुरु ने महिला को पुरुष के बराबर रखा ... महिला पुरुष के लिए बाधा नहीं थी, लेकिन भगवान् की सेवा करने और मोक्ष की तलाश में एक भागीदार थी"।

विवाह: गुरु नानक देव ने गृहस्थ की संस्तुत की - एक गृहस्थ का जीवन, ब्रह्मचर्य और त्याग के स्थान पर, पति और पत्नी समान भागीदार थे और दोनों को स्वामीभक्ति की आज्ञा दी गई थी। पवित्र छंदों में, घरेलू सुख को एक पोषित आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है और विवाह ने ईश्वर के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए एक निरंतर रूपक प्रदान किया है। भाई गुरदास, प्रारंभिक सिक्ख धर्म के कवि और सिख सिद्धांत के एक आधिकारिक व्याख्याकार, महिलाओं को उच्च सम्मान देते हैं। वे कहते हैं:

"एक महिला, अपने माता-पिता के घर में प्रिय होती है, जिसे उसके पिता और माता बहुत प्यार करते हैं। अपने ससुराल में, वह परिवार का स्तंभ होती है, उनके अच्छे भाग्य की दायित्व होती है... आध्यात्मिक ज्ञान एवं मोक्ष में भागीदार और महान गुणों से संपन्न, एक महिला, पुरुष का आधा हिस्सा, उसे मुक्ति के द्वार तक ले जाती है। (वारन, वि. 16)

समान स्थिति: पुरुषों और महिलाओं के बीच समान स्थिति सुनिश्चित करने के लिए, गुरुओं ने दीक्षा, निर्देश या संगत (पवित्र फेलोशिप) और पंगत (एक साथ भोजन करना) गतिविधियों में लिंग के बीच कोई अंतर नहीं किया। सरूप दास भल्ला, महिमा प्रकाश के अनुसार, गुरु अमर दास ने महिलाओं द्वारा घूंघट के प्रयोग का विरोध किया। उन्होंने शिष्यों में महिलाओं को कुछ समुदायों की निगरानी के लिए नियुक्त किया और सती प्रथा के विरुद्ध प्रचार किया। सिक्ख इतिहास में कई महिलाओं के नाम दर्ज हैं, जैसे माता गुजरी माई भागो, माता सुंदरी, रानी साहिब कौर, रानी सदा कौर और महारानी जींद कौर, जिन्होंने अपने समय की घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिक्षा: सिक्ख धर्म में शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह किसी की भी सफलता की कुंजी है। यह व्यक्तिगत विकास की एक प्रक्रिया है और यही कारण है कि तीसरे गुरु ने कई विद्यालयों की स्थापना की। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"सभी दिव्य ज्ञान और चिंतन गुरु के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं" (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 831) ।

सभी के लिए शिक्षा आवश्यक है और सभी को सर्वश्रेष्ठ बनने के लिए काम करना चाहिए। तीसरे गुरु द्वारा भेजे गए सिक्ख मिशनरियों में से बावन महिलाएँ थीं। 'सिक्ख महिलाओं की भूमिका और स्थिति में, डॉ मोहिंदर कौर गिल लिखती हैं, **"गुरु अमर दास को विश्वास था कि कोई भी शिक्षा तब तक जड़ नहीं ले सकती जब तक कि उन्हें महिलाओं द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है।"**

कपड़ों पर प्रतिबंध: महिलाओं को घूंघट न पहनने की आवश्यकता के अतिरिक्त, सिक्ख धर्म परिधान संहिता के संबंध में एक सरल लेकिन बहुत महत्वपूर्ण वर्णन करता है। यह लिंग की परवाह किए बिना सभी सिखों पर लागू होता है। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"उन कपड़ों को पहनने से बचें, जिनमें शरीर असहज हो और मन बुरे विचारों से भरा हो।" एसजीजीएस, पृष्ठ 16

इस प्रकार, सिक्खों को एहसास होगा कि किस प्रकार के कपड़े दिमाग को बुरे विचारों से भर देते हैं और उन्हें इससे बचना चाहिए। सिक्ख महिलाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे कृपाण (तलवार) और अन्य के साथ अपनी रक्षा करें, यह महिलाओं के लिए अद्वितीय है क्योंकि यह इतिहास में पहली बार है जब महिलाओं से अपनी रक्षा करने की उम्मीद की गई थी और उनसे शारीरिक सुरक्षा के लिए पुरुषों पर निर्भर होने की उम्मीद नहीं की गई थी।

SGGS उद्धरण: गुरु नानक जी का कथन है कि, "पृथ्वी और आकाश में, मुझे कोई दूसरा दिखाई नहीं देता। सभी महिलाओं और पुरुषों के बीच, उसका प्रकाश चमक रहा है।" Sggs पृष्ठ 223। स्त्री से, पुरुष का जन्म होता है; स्त्री के भीतर पुरुष की कल्पना की जाती है; महिला से उसकी सगाई और शादी हो चुकी है। महिला उसकी दोस्त बन जाती है; नारी के माध्यम से भावी पीढ़ियां जन्म लेती हैं। जब उसकी स्त्री मर जाती है, तो वह दूसरी स्त्री की तलाश करता है; स्त्री के लिए वह बाध्य है। तो उसे बुरा क्यों कहते हो? उसी से राजा उत्पन्न होते हैं। स्त्री से स्त्री का जन्म होता है; स्त्री के बिना, कोई भी नहीं होगा। एसजीजीएस पृष्ठ 473

दहेज के संबंध में: "हे मेरे प्रभु, मुझे अपना नाम मेरी शादी के उपहार और दहेज के रूप में दें।" श्री गुरु राम दास जी, पृष्ठ 78, एसजीजीएस की पंक्ति 18

पर्दा प्रथा के विषय में: "रुको, ठहरो, ओ वधु - अपना चेहरा घूंघट से मत ढ़को। अंत में, यह तुम्हें आधा आवरण भी नहीं देगा।" तुमसे पूर्व जो चेहरे पर पर्दा किया करती थी, उनके पदचिन्हों पर मत चलना। अपने चेहरे पर पर्दा करने का एकमात्र गुण यह है कि कुछ दिनों के लिए लोग कहेंगे कि, "क्या गुणी दुल्हन आई है"। तुम्हारा यह घूंघट तभी सत्य हो जाएगा है, जब तुम भगवान् की महिमा को छोड़ते, नाचते और गाते हैं। -पृष्ठ 484, SGGS

महिलाएँ और वास्तव में सभी आत्माओं को आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए दृढ़ता से प्रोत्साहित किया गया था: "आओ, मेरी प्यारी बहनों और आध्यात्मिक साथियों; मुझे अपने आलिंगन में कसकर गले लगाओ। आओ एक साथ जुड़ें, और अपने सर्वशक्तिमान पति भगवान् की कहानियां सुनाएं।" - गुरु नानक, एसजीजीएस पृष्ठ 17, ।

"मित्र, अन्य सभी वस्त्र सुख को नष्ट कर देते हैं, अंगों पर जो पहना जाता है वह पीड़ा देते हैं और गलत सोच से मन को भर जाता है" - SGGS पृष्ठ 16

पगड़ी का महत्व

पगड़ी हमेशा एक सिक्ख का एक अभिन्न अंग रही है। लगभग 1500 A.D और सिक्ख धर्म के संस्थापक, गुरु नानक के समय से, सिक्ख पगड़ी पहनते आ रहे हैं।

पगड़ी या "पगरी" को प्रायः "पग" या "दस्तार" के रूप में छोटा किया जाता है, एक ही वस्त्र के लिए विभिन्न भाषाओं में अलग-अलग शब्द हैं। ये सभी शब्द पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा अपने सिर को ढंकने के लिए पहने जाने वाले परिधान को संदर्भित करते हैं। यह एक लंबे दुपट्टे की तरह कपड़े का एक टुकड़ा होता है जो सिर के चारों ओर लपेटा जाता है या कभी-कभी एक आंतरिक "टोपी" या पटका होता है। परंपरागत रूप से भारत में, पगड़ी केवल समाज में उच्च स्थिति के पुरुषों द्वारा पहनी जाती थी; निम्न स्थिति या निम्न जातियों के पुरुषों को पगड़ी पहनने की अनुमति नहीं थी।

हालांकि गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा बिना कटे बालों को रखना अनिवार्य था, जो कि पांच के या विश्वास के पांच लेखों में से एक था, यह लंबे समय से 1469 में सिक्ख धर्म की शुरुआत से ही सिक्ख धर्म से जुड़ा हुआ है। सिक्ख धर्म दुनिया में एकमात्र धर्म है। जिसमें सभी वयस्क पुरुषों के लिए पगड़ी पहनना अनिवार्य है। पश्चिमी देशों में पगड़ी पहनने वाले अधिकांश लोग सिक्ख हैं। सिक्ख पगड़ी को दस्तार भी कहा जाता है। 'दस्तार' फारसी शब्द है। इसका अर्थ है 'हैंड ऑफ गॉड' जिसका अर्थ है उनका आशीर्वाद।

सिक्ख अपनी कई और विशिष्ट पगड़ियों के लिए प्रसिद्ध हैं। परंपरागत रूप से, पगड़ी सम्मान का प्रतिनिधित्व करती है, और लंबे समय से केवल बड़प्पन के लिए आरक्षित एक वस्तु रही है। भारत के मुगल शासन के काल में, केवल मुसलमानों को पगड़ी पहनने की अनुमति थी। सभी गैर-मुस्लिमों को एक पगड़ी पहनने से दृढ़ता से रोक दिया गया था।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने मुगलों द्वारा इस चुनौति की अवहेलना करते हुए अपने सभी सिक्खों को पगड़ी पहनने के लिए कहा। यह उच्च नैतिक मानकों की मान्यता में पहना जाना था, जिसे उन्होंने अपने खालसा अनुयायियों के लिए तैयार किया था। वह चाहते थे कि उनका खालसा विशिष्ट हो और "शेष संसार से अलग दिखने" के लिए दृढ़ संकल्पित हो। वह चाहते थे कि वे सिक्ख गुरुओं द्वारा निर्धारित अद्वितीय मार्ग का अनुसरण करें। इस प्रकार, एक पगड़ीधारी सिक्ख हमेशा भीड़ से अलग खड़ा होता है, जैसा कि गुरु का इरादा था; क्योंकि वह चाहते थे कि उनके 'संत-सैनिक' न केवल आसानी से पहचाने जा सकें, बल्कि आसानी से मिल भी जाएँ।

जब एक सिक्ख पुरुष या महिला पगड़ी पहनती है, तो पगड़ी केवल कपड़े का एक फीता नहीं रह जाती है; क्योंकि यह सिक्ख के सिर के साथ एक ही हो जाती है। पगड़ी साथ ही सिक्खों द्वारा पहनी जाने वाली आस्था की चार अन्य वस्तुओं का अत्यधिक आध्यात्मिक और लौकिक महत्व है। जबकि पगड़ी पहनने से जुड़े कई प्रतीक हैं - स्वतंत्रता, समर्पण, स्वाभिमान, साहस और धर्मपरायणता, लेकिन!, सिक्खों द्वारा पगड़ी पहनने का मुख्य कारण उनके संस्थापक के लिए उनका प्यार, आज्ञाकारिता और सम्मान दिखाना है। खालसा गुरु गोबिंद सिंह।

उपरोक्त मुख्य अंश में कथित शब्दों को किसी और से बदलने की आवश्यकता है। 'इसका कारण' हो सकता है

"पगड़ी हमारे लिए हमारे गुरु का उपहार है। इस तरह हम स्वयं को सिंह और कौर के रूप में ताज पहनाते हैं जो हमारी अपनी उच्च चेतना के प्रति प्रतिबद्धता को सिंहासन पर बिठाती है। पुरुषों और स्त्रियों के लिए समान रूप से, यह अनुमानित पहचान स्वत्व, सभ्यता और विशिष्टता व्यक्त करती है। । यह दूसरों के लिए एक संकेत है कि हम अनंत की छवि में रहते हैं और सभी की सेवा करने के लिए समर्पित हैं। पगड़ी पूरी प्रतिबद्धता के अलावा किसी वस्तु का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। जब आप अपनी पगड़ी बांधकर सबसे अलग दिखना चुनते हैं, तो आप निडर होकर एक अकेले के रूप में खड़े होते हैं। छह अरब लोगों से अलग खड़ा व्यक्ति। यह सबसे उत्कृष्ट कार्य है।" (सिक्खनेट से उद्धृत)

विनम्रता आपकी यात्रा का मुख्य सार है

विनम्रता सिक्ख धर्म का एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है। इसके अनुसार सिक्खों को ईश्वर के सामने विनम्रतापूर्वक झुकना चाहिए। विनम्रता या नम्रता, पंजाबी में निकटवर्ती शब्द हैं। नम्रता एक गुण है जिसका गुरबाणी में उत्साहपूर्वक प्रचार किया जाता है। इस पंजाबी शब्द का अनुवाद "नम्रता", "उदारता" या "विनम्रता" है। ऐसा मनुष्य जिसका मन इस विचार से विचलित नहीं होता है कि वह किसी से बेहतर या अधिक महत्वपूर्ण है।

समस्या क्षेत्र - उपरोक्त वाक्य सही नहीं है उपरोक्त वाक्य पूर्ण नहीं है

यह सभी मनुष्यों के पोषण के लिए एक महत्वपूर्ण गुण है और एक सिक्ख की मानसिकता का एक अनिवार्य हिस्सा है और यह गुण हर समय सिक्ख के साथ होना चाहिए। सिक्ख शस्त्रागृह में अन्य चार गुण हैं : सत्य (सत), संतोष (संतोख), करुणा (दया) और प्रेम (प्यार) है।

एक सिक्ख के लिए ये पाँच गुण आवश्यक हैं और इन गुणों को आत्मसात करने और उन्हें अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बनाने के लिए गुरबाणी का ध्यान और पाठ करना उनका कर्त्तव्य है।

गुरबाणी हमें क्या बताती है:

"विनम्रता का फल सहज ज्ञान से प्राप्त शांति और आनंद है। विनम्रता के साथ वे उत्कृष्टता का खजाना ईश्वर का ध्यान करना जारी रखते हैं। ईश्वर से अभिज्ञ प्राणी विनम्रता में डूबा हुआ है। जिसका हृदय दयापूर्वक विनम्रता के साथ स्थिर है। सिक्ख धर्म विनम्रता को ईश्वर के समक्ष भिक्षा पात्र के रूप में प्रस्तुत करता है।

गुरु नानक, सिक्ख धर्म के प्रथम गुरु :

"अपने मन में प्यार और विनम्रता के साथ सुनना और विश्वास करना, अपने भीतर गहरे पवित्र मंदिर में स्वयं को ईश्वर के नाम से शुद्ध करें।"- SGGS पृष्ठ 4

"संतोष को अपने कान की बाली बना लो, विनम्रता को अपने भिक्षापात्र बना लो, और ध्यान को अपने शरीर पर ज्ञलगाने वाली भस्म बना लो।"- एसजीजीएस पृष्ठ 6।

"विनम्रता के क्षेत्र में, शब्द सौंदर्य है। वहाँ अतुलनीय सुंदरता के रूप बनाए जाते हैं।" SGGS पृष्ठ 8

"विनम्रता, उदारता और अंर्तज्ञान मेरी सास और ससुर हैं" -SGGS पृष्ठ 152।

आध्यात्मिकता की ओर यात्रा

गुरु ग्रंथ साहिब एक शाश्वत जीवित गुरु है, जो सिक्ख गुरुओं, हिंदू और मुस्लिम संतों की एक काव्य रचना है। यह संकलन उनके माध्यम से समस्त मानव जाति के लिए ईश्वर की ओर से एक उपहार है। गुरु ग्रंथ साहिब का दृष्टिकोण ईश्वरीय न्याय पर आधारित समाज का किसी भी प्रकार के उत्पीड़न के बिना है। जबकि ग्रंथ हिंदू धर्म और इस्लाम के धर्मग्रंथों को स्वीकार करता है और उनका सम्मान करता है, यह इनमें से किसी भी धर्म के साथ नैतिक सामंजस्य नहीं दर्शाता है। गुरु ग्रंथ साहिब में महिलाओं को पुरुषों के बराबर की भूमिका के साथ बहुत सम्मान दिया जाता है। महिलाओं के पास पुरुषों के समान आत्माएं होती हैं और इस प्रकार मुक्ति प्राप्त करने के समान अवसर के साथ आध्यात्मिकता के उच्च स्तर को प्राप्त करने का समान अधिकार होता है। महिलाएँ प्रमुख धार्मिक सभाओं सहित सभी धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों में भाग ले सकती हैं।

सिक्ख धर्म समानता, सामाजिक न्याय, मानवता की सेवा और अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता की वकालत करता है। सिक्ख धर्म का आवश्यक संदेश दैनिक जीवन में करुणा, ईमानदारी, विनम्रता और उदारता के आदर्शों का अभ्यास करते हुए हर समय आध्यात्मिक भक्ति और ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखना है। सिक्ख धर्म के तीन मूल सिद्धांत ध्यान और ईश्वर को याद करना, ईमानदारी से जीने के लिए काम करना और दूसरों के साथ साझा करना है।

आत्मा के लिए इस आध्यात्मिक यात्रा पर जाने का प्रयास करने के लिए बधाई। अनुवाद कभी भी मूल के करीब नहीं हो सकता, खासकर जब पूरा गुरु ग्रंथ साहिब कविता में हो और रूपकों का उपयोग कार्य को अत्यधिक कठिन बना देता है। दिव्य संदेश में, हिंदु, मुस्लिम पौराणिक कथाओं में प्राय: प्रह्लाद, हिरण्याक्ष, लक्ष्मी, ब्रह्मा आदि का प्रयोग किया जाता है। कृपया इन्हें अक्षरशः न पढ़ें बल्कि इनके अंतर्निहित संदेश को समझें। ध्यान इस तथ्य पर है कि ईश्वर एक है और उसके साथ मिलन ही मानव जीवन का लक्ष्य है।

यह कार्य वर्षों से कई स्वयंसेवकों द्वारा किया गया है, ताकि आप तक आपकी भाषा में ईश्वरीय संदेश पहुँचाया जा सके। यदि आपका कोई प्रश्न हैं तो कृपया walnut@gmail.com पर बेझिझक ईमेल करें और हमें इस यात्रा में आपके साथ जुड़ना अच्छा लगेगा।